जय श्री राम, जय जय राम, जय श्री राम, जय जय राम, जय श्री राम, जय जय राम, जय श्री राम, जय जय राम, जय श्री राम, जय जय राम, जय श्री राम, जय

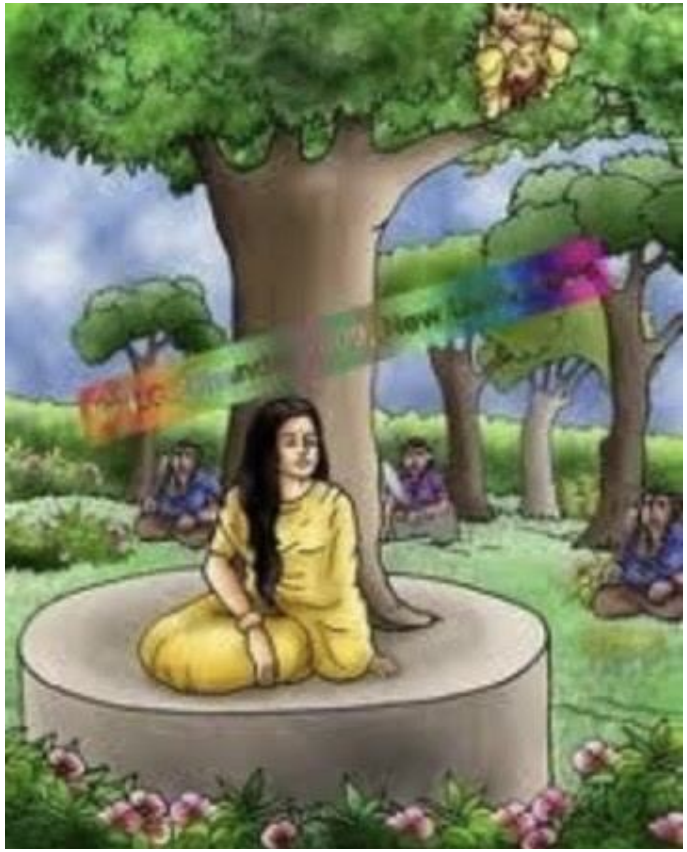

अर्हत रामायण

जैन आगमाधारित अर्हत

रामायण

सम्प्रेरक

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक प्रज्ञा महार्षि श्री सुमन मुनि जी महाराज के सुशिष्य

भंडारी मुनि श्री सामन्त भद्र जी महाराज (बाबा जी)

प्रस्तुत कर्त्ता-

स्वतन्त्र जैन जलन्धर

9855285970

अर्चना-राजेश जैन

86,करतार एवन्यु हैबोवाल

लुधियाना । swatantarjain@ gmail .com

;

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक श्री सुमन मुनि जी महाराज

(जीवन परिचय)

-मुनि श्री सामन्त भद्र जी महाराज

परिस्थितियाँ ही मनुष्य को बनाती या बिगाड़ती है, यह स्थूल सत्य है। वास्तविकता यह है कि मनुष्य स्वयं अपना ब्रह्मा-सृष्टा, विष्णु-संरक्षक व महेष-संहारक है। इस बात का प्रमाण उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक श्री सुमन मुनि जी महाराज का जीवन। महाराज श्री जी का जन्म 1936 बसंतपंचमी के दिन पाँचुगाँव में चौधरी श्री भीवराज जी के आँगन में माता श्री वीरांदे की कुक्षी से हुआ। बाल्यकाल से ही मात्रा-पिता का साया सिर से उठ गया और बड़ा भाई भी बिछुड़ गया। निराश्रित,संकटो को सहन करते पूर्व-जन्म के पुण्योदय से किसी तरह पंजाब कपूरथला में पहुँच गये। रहने का कोई स्थान नहीं,जैन स्थानक के सामने शालीमार बाग आशीयाना बना और जैन संतो से परिचय हो गया और गुरुदेव श्री माहेन्द्रमुनि जी अपना जीवन अर्पण कर पितामह गुरुदेव प्रवर्त्तक श्री शुक्लचन्द जी महाराज के साथ चातुर्मास हेतु साढ़ौरा पहुँचे और आसोज सुदी 13 संवत् 2007 को जैन भगवती दीक्षा ग्रहण कर संयम मार्ग पर अग्रसर हो गये। विचक्षण बुद्धि से आप आगम ज्ञान के साथ प्राकृत,संस्कृत,हिन्दी, पंजाबी, गुजराती और इंगलिश भाषाओं के विद्वान पंडित बने। आप श्री जी इतिहास केसरी, प्रवचन दिवाकर, प्रज्ञा महार्षि, निर्भीक वक्ता, श्रमणसंघ सलाहकार,मन्त्री एवं प्रवर्त्तक पद से विभूषित हैं ।

आप मिलनसार,सिद्धांतवादिता और स्पष्टवादिता के धनी, स्वतन्त्र लेखन कला की शैली के प्रकांड विद्वान है । आपकी रचनाएं अत्यन्त रोचक हैं। आप अस्वस्थ होते हुए भी श्रमणसंघ एकता के लिए सदा प्रयासरत हैं।

शासनदेव प्रभु महावीर की कृपा आप पर बनी रहे और दीर्घायु हों।

हृदयोद्गार

ब्रह्मा,विष्णु,महेष,शिव,शंकर, हरि,राम ।

ऐसे आदि जिनेश को कोटि कोटि प्रणाम॥

सर्व प्रथम संसार के भव सागर से मुक्त करवाने वाली भव्य आत्माओं को वन्दन करने के उपरान्त जो बचपन से हम रामलीला के माध्यम से चलचित्रों के माध्यम से एवं टी.वी सीरीयल के माध्यम से जो रामायण का ज्ञान प्राप्त किया उसके पश्चात् प्रवर्त्तक श्री शुक्लचन्द जी महाराज कृत शुक्ल जैन रामायण एवं तीर्थंकर चरित्र से तीन लोक के ज्ञाता जो जीव का वर्तमान, भूतकाल और भविष्य देख कर हर घटना का कोई न कोई कारण होता है जिससे घटना घटित होती है। पात्र वहीं है परन्तु दर्शाने का ढ़ंग अलग-अलग है । सभी पात्र जैन धर्म के अनुयायी थे। जैनधर्म के बीसवें तीर्थंकर मुनि सुव्रत स्वामी के समय की घटना जो आज से ग्यारह लाख वर्ष पूर्व की है। सर्वप्रथम महार्षि वाल्मिक की संस्कृत रामायण मानी जाती है, जो इतिहासकार भट्ट के अनुसार आज से 9300-16000 वर्ष पूर्व की है फिर तो भारत की प्रत्येक प्रांतीय भाषाओं में लिखी गई, वैष्णव संस्कृति में तुलसी रामायण को अधिक मान्यता मिलती है जो वि.सं 1630 के आस-पास है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी सर्व प्रथम जैनाचार्यों को वन्दना की है।* दिगम्बर जैन समाज में पद्म चरित्र के नाम से लिखी गई है। यह सब पद्य में हैं। यह मैं गद्य और पद्य में कथा के रुप प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

- जे प्राकृत कवि परम समाने। भाषा जिन हरि चरित बखाने। भए जे अंहहि जे होइहंहि आगे। प्रनवउं सबहिं कपट छल त्यागे।।..बालकाण्ड,चौपाई-3

हम सब जैन सम्प्रदाय के अनुयायी ने कभी अपने ही अरिहन्तो की वाणी को पढ़ने का नां तो समय मिलता है और नां ही हमें अवगत करवाया जाता है।सारी सृष्टि कर्मों के अधीन ही चलती है, जैसे अंजना के पूर्वभव के कारण पवनंजय से विवाह के पश्चात 22 वर्ष तक विमुख रही, और जब गर्भ में हनुमान जी का जीव (जो पूर्व कीं भवों में संयम में और देवलोकों में रहे) आने से कलंकित हुई । हम भी दुःखसुख अपने पूर्व कर्मों अनुसार ही भोगते हैं परन्तु अन्जाने में हम दोष फिर किसी न किसी को देते हैं और फिर कर्मों के चक्कर में उलझते हैं। जैन धर्म जो कभी जन-जन का धर्म था, आज क्यों अल्पसंख्यक हो गया, यह भी हमारे चौदहपूर्व के धारक आचार्य श्री भद्रबाहू स्वामी जी ने चन्द्रगुप्ति को जो 16 स्वप्न आए उनकों आने वाले समय की भविष्यवाणी बताया, वे समझने का प्रयास करे-

उस समय उज्जयिनी में चन्द्रगुप्ति नामक राज्य करता था। महाराज को रात्रि के पिछले प्रहर में आश्चर्यजनक 16 स्वपन देखे। उन स्वपनों का फल जानने की राजा के मन में तीव्र इच्छा हुई और नगर के बाहर आचार्य भद्रबाहू अपने 12000 मुनियों के साथ राजकीय उपवन में पधारे । राजा चन्द्रगुप्ति अपने मन्त्रियों, सामन्तों, परिजनों और परितिष्ठित नगर निवासियो के साथ आचार्य भद्रबाहु स्वामी के समक्ष अपने सोलह स्वप्न सुनाते हुए फल जानने की इच्छा व्यक्त की ।

ज्ञानबल से आचार्य श्री स्वपनों का फल बताते कहा आने वाला समय घोर अनिष्ट का सूचक है । जो इस प्रकार है –

(1) **अस्तमान रविदर्शन**-पंचमकाल में द्वादशांगादि ज्ञान न्यून हो जाएगा।

(2) **कल्पवृक्ष की शाखा भंग**- भविष्य में राजा दीक्षा ग्रहण नहीं करेगें।

(3) **छलनीतुल्य सछिद्र चन्द्र**-जैन धर्म में अनेक मतों का प्रादुर्भाव होगा ।

(4) **बारह फणों वाला सांप**- निरन्तर बारह वर्ष का दुष्काल।

(5) **उल्टे लौटते देवविमान**-देवता विद्याधर, चारणमुनि भरतक्षेत्र में नहीं आवें गे ।

(6) **अशुचि स्थान में कमल**- उत्तम कुल की जगह हीन जाति के जैन धर्म अनुरागी होगें ।

(7) **भूतों का नृत्य**- अधो जाति के देवों के प्रति श्रद्धाय़

(8) **खद्योत का उद्योत-** जैनागमों का उपदेश करने वाले मिथ्यात्व से ग्रस्त होगें और जैन धर्म कहीं कहीं रहे गा।

(9) **बीच मे सुखा पर छिछले जल से युक्त किनारो वाला सरोवर-**जिन पवित्र स्थानों पर तीर्थंकरों के कल्याणक हुए हैं वहां धर्म नष्ट होगा। दक्षिणादि कहीं कहीं रहेगा।

(10) **कुत्ते को स्वर्ण थाली में खीर-** लक्ष्मी प्राय़ः नीच पुरुषों के पास कुलीन वंचित होगें ।

(11) **बन्दर को हाथी पर-** नीच कुल के अनार्य राज्य करेगें ।

(12) **समुन्द्र के तटों का उलंघन**- राजा लोग न्यायमार्ग का उलंघन,प्रजा से लक्ष्मी लूटने वाले होंगे ।

(13) **बछड़े द्वारा रथ-**युवास्था में ही संयम ग्रहण करेगे, वृद्धावस्था में शक्ति क्षीण होगी ।

(14) **राजकुमार को ऊँट पर**- सत्य मार्ग का त्याग कर हिंसा मार्ग अपनाना .

(15) **धूलि से अच्छादित रत्न राशी**- निग्रन्थ मुनि भी आपस में एक दूसरे की निन्दा करेगें ।

(16) **दो काले हाथियो के लड़ते**-समय पर बादल नहीं बरसेगें।

महाराज चन्द्रगुप्ति आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी से फल जान कर पुत्र को राज-पाट संभाल कर आचार्य श्री जी के पास दीक्षित हो गये ।

ज्ञानियों का ज्ञान आज बिल्कुल सत्य हो रहा है। हमें अपने जैन आगमों के ज्ञान से परिचित होने की आवश्यकता है। जैन अर्हत रामायण के माध्यम से भी अपनी सांस्कृति को समझें, इस ध्येय से इस को अति संक्षिप्त कर लिख रहा हूँ जो पढ़ने में सुविधाजनक रहे ।

मैं प्रवर्त्तक श्री सुमन मुनि जी महाराज एवं अन्य जैन श्रमण-श्रमणियों का भी अभारी हूँ, जिन से ज्ञान श्रवण करने और स्वाध्याय का लक्ष्य अपनाया ।

किसी प्रकार की कोई गलती रह गई हो तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ ।

स्वतन्त्र जैन जलन्धर

9855285970

11.3.2020

कर्म काण्ड

(भव-भ्रमण)

विश्व की प्रचीन संस्कृतियों में जम्बू द्वीप के आर्य क्षेत्र भारत में जैन संस्कृति सब से प्रचीन संस्कृतियों में एक है। इसके प्रणेता विश्वकर्मा भगवान ऋषभदेव हैं, जिन्होंने सर्वप्रथम असि,मसि, कसि का ज्ञान मानव को दिया । जैन संस्कृति आठ कर्मों पर अधारित(-ज्ञानावर्णिय,दर्शनावर्णिय,मोहनीय, अन्तराय, वेदनीय,नाम, **गौत्र और आयुष्य) है। इन्हीं के कारण वैर-विरोध, मित्रता अनेकों जन्मों तक चलती है। यह संस्कृति करोड़ों वर्ष प्रचीन होने के कारण नई नईं संस्कृतियों का बोलबाला हो गया । भारत की वैदिक संस्कृति में सब से प्रचीन वेद ऋग्वेद की मान्यता है । ऋग्वेद में भी भगवान ऋषभदेव की स्तुति की गई हैं।भगवान ऋषभदेव का पुत्र भरत ने छःखण्ड पर राज्य किया, जिसमें समस्त पृथ्वी आ जाती है और इसी के नाम से देश का नाम भारत पड़ा और इसका पौत्र सूर्यदेव से सूर्यवंश हुआ जिसमें भगवान राम जैन धर्म के बीसवें तीर्थंकर के समय (वैष्णव सहित्य त्रेता युग) अवतरित हुए । उस समय आयुकाल हजारोंलाखों वर्षों का हुआ करता था। भगवान राम जी की आयु 15000 वर्ष की थी । रामायण पर बहुत शोध हुआ अधिकतर गोस्वामी तुलसी दास की राम चरितमानस पर विश्व (देश-विदेश) में लगभग 500 महानुभावों ने डाक्टरेट की औंर वह श्रीराम का जन्म ईसा से 7323 पूर्व आज से 9343 वर्ष (कल युग) का मानते हैं। जबकि रामचरित मानस में श्रीराम ने 12000 वर्ष अयोध्या में राज्य**

किया। द्वापर युग में रत्नाकर नारद जी से राम कथा सुन सन्यास धारण कर लिया और नारद जी ने राम-राम का जाप करने को कहा और अर्न्तध्यान हो गये। रत्नाकर मार-मार करता ताल्लन **हो गया और राम-राम जपने लगा। ब्रहमा जी ने ज्ञान दिया और कहा- तुम वाल्मिक नाम से प्रसिद्ध होगें, राम कथा लिखो । वाल्मिक जब पांडव विजयी हुए, तब भी वह उपस्थित हुए थे।राम-रावण युद्ध और महाभारत युद्ध में 1100000 वर्ष से भी अधिक का अन्तराल है।शोध करने वाले महार्षि वाल्मिक रामायण के समय ग्रह चाल और नक्षत्रों के अनुसार विज्ञान और तर्क पर अधारित है यह ग्रह आज से 9343 वर्ष पूर्व इकट्ठे हुए थे और उसके अनुसार जन्म 10 जनवरी दोपहर के 12 बजे होते हैं जबकि सदियों से चेत्र माह की नवमी (राम नवमी) को मनाया जाता है। उस शोध के अनुसार तो श्रीराम आज जीवित होने चाहिए। यह नक्षत्र-ग्रह लाखों वर्ष पहले भी ऐसा संयोग बना होगा ।जैन रामायण पर शोध करने वाले लुधियाना में डॉ मुलखराज जैन ही हैं जिन्होने जैन शुक्ल रामायण पर पी.एच.डी की ।**

रामायण की पट्टकथा अनेकों विद्वानों ने अपनी विचक्षण बुद्धि से इसे रोमांचिक बनाया, सबने अपने अपने मन के भावों से उड़ान भरी, यही कारण है कि सब लेखकों का लेखन सभी पात्र एक जैसे होते हुए भी घटनाएं भिन्न भिन्न है । दक्षिण के कईं लेखक तो सीता को रावण की पुत्री तक मानते हैं। महार्षि वाल्मिक ने तो घटना ही अपने सामने की बना दी । परन्तु तीन लोक के

ज्ञाता अरिहन्त प्रभु इसे कईं जन्मों का चला आ रहा सम्बन्ध बताया, जिसका विवरण दे रहा हूँ ।

समस्त जीव अपने शुभाशुभ कर्मों को भोगते हैं। दक्षिण भारत में क्षेमपुर नाम का नगर में नयदत्त सेठ की पत्नी सुनन्दा के दो पुत्र थे धनदत्त (राम का जीव) और वसुद्त्त (लक्ष्मण का जीव) और उनका एक मित्र था यज्ञवालक (विभिषण का जीव) । इसी नगर में एक सागर नाम का सेठ था जिसकी पुत्री थी गुणवती (सीता का जीव)। सागर ने अपनी पुत्री की सगाई धनदत्त से कर दी। वहाँ एक चतुर नारी लालची थी रत्नप्रभा नाम की, उस ने यह नाता तुड़वा कर पैसे के लालच मे एक बुढ़े सेठ श्रीकान्त (रावण का जीव) से करवा दिया। यज्ञवालक (विभिषण का जीव) ने अपने मित्रों को यह बात बता दी कि आपकी मंगेतर श्रीकान्त (रावण का जीव) को ब्याही गई है । यह सुनते ही वसुद्त्त (लक्ष्मण का जीव) को क्रोध आ गया और सेठ श्रीकान्त(रावण का जीव) को मारने के लिए चल पड़ा । जब वसुद्त्त(लक्ष्मण का जीव) ने प्रहार किया तो श्रीकान्त(रावण का जीव) ने कटार से हमला कर दिया, जिससे दोनों का प्राणान्त हो गया और मरकर दोनों हिरण पैदा हुए। और उधर गुणवती (सीता का जीव) भी आयु पूर्ण कर हिरणी के रुप में जन्म लिया । उस हिरणी के चक्कर में दोनों हिरण आपस में भिड़ गये और प्राण त्याग दिए । धनदत्त (राम का जीव) वसुद्त्त (लक्ष्मण का जीव) को मृत देखकर शोकाकुल हुए । फिरते फिरते जंगल में रात पड़ गई, भूख भी सताने लगी, दूर एक सन्त दिखाई दिया उनके पास जाकर कुछ खाने के लिए अन्न की याचना की, सन्त ने कहा मुनियों के पास

रात को कुछ खाने के लिए नहीं होता, तुम भी रात को खाना छोड़ दो, खाते खाते कोई राजा महाराजा नहीं बचे, वहीं धन्नदत्त(राम का जीव) ने शरीर त्याग कर, सुधर्मा देलोक में देव हुए वहाँ सुख भोग कर महापुर नामक नगर में मेरुसेठ की धर्मपत्नी धारिणी के घर जन्म लिया और नाम मिला पद्मरुचि (राम का जीव) जो ज्ञान विद्वान और रुपवान परोपकारी थे । एक दिन रास्ते में एक बैल अनाथ पाया। अज्ञानी लोक उसे सताते थे, पद्मरुचि(राम का जीव) ने उसे एक तरफ कर उसको अन्य कष्टों से मुक्त किया और उचित ओषध से उपचार की व्यस्था की और महामन्त्र का शरणा दिया जिससे वह त्रियंच गति से मनुष्य जन्म में छत्रछाया भूपाल की महारानी श्रीदत्ता की कुक्षी में जन्म लिया और वृषभध्वज (सुग्रीव का जीव) नाम पाया। क्रीड़ा करते हुए वह वहाँ पहुँच गये जहाँ वह बैल के रुप में अस्वस्थ पड़े थे जातिस्मरण ज्ञान का उदय हुआ और वहाँ पर चिकत्सालय बनवा दिया और पद्मरुचि (राम का जीव)को बुला कर उनका धन्यवाद किया । दोनों ने बारहव्रत धारण कर आयु पूर्ण कर दोनों दूसरे देवलोक में देव हुए पद्मरुचि(राम का जीव) देवलोक से आयुपूर्ण कर मेरुपर्वत के पश्चिम में वैताढ्यगिरि पर्वत पर नन्दवर्त नगर में नन्दीश्वर नाम के राजा का पुत्र हुआ। उसका नाम नयानन्द(राम का जीव) रखा गया, वह राज्य सुख का त्याग कर प्रव्रज्या ग्रहण संयम पालन कर चौथे स्वर्ग में देव हुआ, वहाँ से आयु पूर्ण कर विदेह में राजा विपुल वाहन के श्रीचन्द (राम का जीव)नाम का पुत्र हुआ, वहाँ से राज्य वैभव त्याग कर समाधिगुप्त मुनि के पास दीक्षित हुए संयम पाल कर पांचवे देवलोक में इन्द्र हुआ । वहाँ से च्यव कर

श्रीराम नाम के आठवें बलदेव हुए । वृषध्वज का जीव सुग्रीव आ कर जन्म लिया और श्रीराम की भक्ति से ओतप्रोत है श्रीकान्त (रावण का जीव) भव भर्मण करता हुआ मृणालकन्द नगर में शंभु राजा के हेमवती रानी की कुक्षी से वज्रकंठ नामक पुत्र हुआ और वसुदत्त भी जन्म-मरण करता हुआ उसी राजा के श्रीभूति नाम का पुत्र हुआ और गुणवती भी भवभ्रमण करती हुई श्रीभूति की पत्नी सरस्वती की कुक्षी से कन्या हुई और नाम मिला वेगवती, जैनमुनियों से द्वेष रखती हुई सुदर्शन नाम के मुनि पर लांछन लगा कर दुराचारी बताया और व्यभचारी को वन्दना करने से रोका, जनता भ्रमित होकर उपद्रव करने लगी, मुनि आहत हुए और कलंक मिटाने के लिए कायोत्सर्ग में रहने का निश्चय किया। जिससे वेगवती का मुँह विकृत एवं कुरुप हो गया। वेगवती ने जनसमूह के साथ मुनिश्री जी से क्षमायाचना की और अपना अपराध स्वीकार किया। मुनि का कलंक दूर हुआ और वेगवती स्वस्थ हुई जिससे राजा शंभु उस पर मोहित हो गया और उसके पिता श्रीभूति से विवाह की याचना की जो इनकार होने पर क्रोधित होकर श्रीभूति को मार डाला और बलपूर्वक वेगवती से भोग किया। वेगवती वहाँ से मुक्त होकर हरिकान्ता नाम की साध्वी से प्रव्रज्या धारण कर चारित्र पालन कर आयु पूर्ण कर ब्रह्मदेवलोक में गई और वहाँ से च्यव कर राजा जनक की पुत्री हुई और शंभुराजा (रावण का जीव) भवभ्रमण करता हुआ कुशध्वज ब्राह्मण की पत्नी सावित्री के उदर से प्रभास नाम का पुत्र हुआ और विजयसेन मुनि श्री के आगे दीक्षा ग्रहण कर कठोर तप अराधना कर आयु पूर्ण कर तीसरे देवलोक में उत्पन्न हुआ और वहाँ से च्यव कर

राक्षसाधिपति दशकन्धर हुआ । याज्ञवल्कय भव भ्रमण करता हुआ विभिषण हुए । वसुदत्त पुरानी मित्रता निभाते भवभ्रमण करते हुए महाराजा दशरथ की पत्नी सुमित्रा का पुत्र लक्ष्मण हुए। इस तरह सब पूर्व जन्मों के कारण इकट्ठे हुएऔर यह घटना घटी।

जैन संस्कृति ज्ञान पर अधारित है, वे तर्क और विज्ञान पर निर्भर नहीं करती। आज विश्व के वैज्ञानिक खोज करना चाहते हैं कि कहीं और भी मानव जीवन है,चाँद और मंगल ग्रह तक शोध किया, जबकि अरिहन्त भगवन जो तीन लोक के ज्ञाता होते हैं ने अपने ज्ञान से बताया कि पृथ्वी की तरह अन्य स्थान भी हैं जहाँ मानव है, वहाँ भी पाप-पुण्य होते हैं, वह है ऐरावत क्षेत्र, धातरी खण्ड, विद्यधरों की श्रेणी और महाविदेह क्षेत्र। महाविदेह क्षेत्र में सदैव अरिहन्त भगवन विचरते हैं। पृथ्वी के सबसे निकट महाविदेह क्षेत्र में श्री सीमंधर स्वामी विराजमान है, जिनकी आयु ढ़ाई लाख वर्ष बीत चुकी है और अभी सवा दो लाख वर्ष आयु शेष है । इसी तरह श्रीराम जी की आयु 15000 वर्ष की थी और लगभग 12 लाख वर्ष पूर्व की घटना है शरीर की लम्बाई 22 हाथ की थी।

जे.एन.यू., दिल्ली विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी और इलाहबाद,नालन्दा विश्वविद्यालय, आई.आई.टी खरगपुर एवं अन्य विश्वविद्यालयों के शोधकर्त्ता से निवेदन है कि जैन साहित्य पर भी विचार करें । अर्हत (पूर्ण पुरुषकेवलज्ञानी अरहन्त) रामायण कोई उपन्यास नहीं वाणी है।

तर्क,विज्ञान,उपन्यास न है अफसाना ।
अर्हत वाणी है जन जन तक पहुँचाना।।

अर्हत जैन रामायण

हरिवंश की उत्पति

कोशम्बी नगरी में सुमुख नाम का राजा शासन करता था । वह रुपवान और तेजस्वी था । एक बार वह बसन्तोत्सव मनाने के लिए हाथी पर सवार होकर नगर के मध्य में होता हुआ उद्यान की ओर जा रहा था कि रास्ते में वीरकुविंद नामक जुलाहे की पत्नी वनमाला पर राजा की दृष्टि पड़ी, वह अत्यन्त सुन्दर थी जिससे राजा असक्त हो गया। प्रधानमन्त्री सुमति उसके साथ था, राजा का मनोभाव देखकर वह जान गया और पूछा-महाराज आप किस विचारों में खो गये हो । अपकी चिन्ता का कारण क्या है ? "सखे ! उस सुन्दरी ने मेरा मन चुरा लिया है। तुम उसे अन्तःपुर में पहुँचाने का काम करो । " स्वामिन वह जुलाहे की पत्नी है । मैं आवश्य ही उसे आप के पास पहुँचाने का प्रयास करूँगा । मन्त्री ने आत्रेयी नामक परिव्राजिका को बुलाया, वह बहुत चतुर थी, मन्त्री ने राजा का काम उस को समझाया जिससे वह आत्रेयी उसके पास जाकर पूछे- आप क्यों चिंतित हैं? माता !-इसका कोई इलाज नहीं मेरा मन पापी हो गया है, मेरा मन राजा की ओर आसक्त हो गया है, कहां वह और कहां मैं ? आत्रेयी ! कोई बात नहीं, वह उस को लेकर बसन्तपुर राजा के पास गई और राजा कामक्रीड़ा करने लगा । उधर वीरकुविंद पत्नी को घर में न देख कर खोजने लगा । जब नहीं मिली तो वह पागल सा घुमने लगा और वनमाला को पुकारने लगा । पुकारते-पुकारते राजमहल के

पास पहुँच गया जब राजा और वनमाला ने उसकी पुकार सुनी तो स्तब्ध रह गये और ग्लानि से वह सोचने लगे । हम कितने नीच हो गये, काम वश इसको बरबाद कर दिया । पश्चाताप ही कर रहे थे कि आकाश से बिजली गिरी और दोनों की मृत्यु हो गई और हरिवर्ष क्षेत्र में युगलिये पैदा हुए। जिससे पुत्र का नाम हरि और पुत्री का नाम हरिणी रखा । दोनों सुखोपभोग करने लगे । वीरकुविंद दोनों की मृत्यु जानकर स्वस्थ होकर अज्ञान तप करने लगा और काल कर स्वर्ग में किल्विषि देव बना । अपने विभंगज्ञान से हरि और हरिणी को सुखोपभोग करते देखा और क्रोधित हो कर हरिवर्ष क्षेत्र आया और दोनों को कल्पवृक्ष सहित उठा कर ले गया, मारने से पहले विचार आया कि इनकी आयु परिपूर्ण नहीं हुई यह मर कर स्वर्ग में जाएंगे,मैं इन्हें दुःखी देखना चाहता हूँ। वह कल्पवृक्ष सहित उन को चम्पापुरी ले गया वहाँ का राजा इक्ष्वाकु वंश चन्द्रकीर्ति निसन्तान मरा था और मंन्त्रीगण उत्तराधिकारी की खोज में थे ।

वह देव आकाश से बोला- सामन्तों- तुम राज्यधिकारी के लिए चिन्ता कर रहे हो, मैं भोगभूमि से आपके लिए लाया हूँ हरि नाम का राजा और हरिणी नाम की रानी होगी, इनके खाने के लिए कल्पवृक्ष साथ लाया हूँ यह आप का खाना नहीं खायेगें,वृक्ष के खाने के साथ आप इन को मांस भक्षण और मदिरा भी पिलाना । युगल मांस भक्षी और मदिरा पान करने वाले के कारण नरकगामी बने ।

रावण, कुंभकरण और विभिषण का जन्म

पताल नगरी में रहते हुए सुमाली की प्रीतिमित्री रानी रत्नश्रवा नाम का पुत्र हुआ । रत्नश्रवा यौवन वय विद्या साधन के लिए कुसमोध्यान गया और तप करने लगा और एर विद्याधर कुमारी की पुत्री पिता की आज्ञा लेकर वहाँ आई और कहने लगी मैं महाविद्या हूँ और तुम्हारी विद्या सिद्ध हो गई है । रत्नश्रवा ने विद्या सिद्ध होने पर साधना समाप्त कर दी और देखा सामने एक सुन्दरी खड़ी है उससे उसका परिचय पूछा, वह बोली- मैं कौतुकमंगल नगर के व्योमबिन्दु विद्यधर की पुत्री हूँ। कौशिका नाम की मेरी बड़ी बहन है । यक्षपुर नरेश की विश्रवा की रानी है।उसका वैश्रमण नाम का पुत्र है इन्द्र के अधीन लंका नगरी में राज करता है। भविष्यवेता के कहने पर पिता ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है ।अपने इष्टमित्रो से परामर्श कर लग्न कर अपने पुष्पक विमान में बैठाकर क्रीड़ा करने लगे । कैकसी ने स्वप्न के साथ एक जीव उत्पन्न हुआ जिससे उसमें क्रूरता आ गई शरीर कोमलता छोड़ दृड़ हो गई और इन्द्र पर अपनी आज्ञा चलाने लगी, गर्भकाल पूर्ण होने पर महा पराक्रमी पुत्र रत्न की प्राप्ती हुई। वह शैय्या पर शांती से नहीं रहता उछल-कूद करता हुआ चंचलता प्रकट करता था। एक बार व्यन्तर जाति देव के राक्षसनिकाय के इन्द्र भीम ने उसके पूर्वज राजा मेघवाहन को दिया हुआ नौ मणियों वाला प्रभावशाली हार उस बालक के देखने में आया और उसने तत्काल अपने गले में डाल लिया और उसके बिम्ब में दस चेहरे दिखाई देने लगे, जिससे उसका नाम दशानन पड़ गया और

रत्नश्रवा कौशिका से कहने लगा-मुझे चारव्रत के धारक मुनिराज ने कहा था कि इस हार का धारक वह अर्धचक्री होगा।
कालन्तर में एक पुत्र को जन्म दिया उसका नाम भानकर्ण अर्थात कुम्भकरण फिर पुत्री चन्द्रनखा (शूर्पनखा) और फिर पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम विभिषण हुआ । तीनो भाई दिनो-दिन बढ़ने लगे ।

रावण की विद्या साधना

दशानन एक दिन मित्रों के साथ खेल रहा था कि आकाश में विमान उड़ते देखा बीच में कोई बैठा हुआ और कैकसी से पूछा यह कौन है तब कैकसी ने कहा- यह मेरी बहन कौशिका का पुत्र वैश्रमण है वह समस्त विध्याधरों इन्द्र का सुभट लंका पर राज करता है । इन्द्र ने तुम्हारे पितामह ज्येष्ठ बन्धुमाली को मार कर राक्षस द्वीप सहित लंकापुरी वैश्रमण को राज करने के लिए दे दिया, तभी से तुम्हारा पिता राज्य की पुनः प्राप्ती की आशा में यहाँ रह रहे है। माता के वचन सुन कर क्रोधित होकर कर कहा-माता तुम्हें अपने पुत्रों के बल का पता नहीं हैं। इस दशमुखी के सामने इन्द्र, वैश्रमण और अन्य विद्याधर किस गिनती में हैं । हम आज तक अनजान थे हमें अब दुःख का पता चला। माता-आपका हृदय बडा कठोर है, आपने इस हृदय-भेदक शल्य को हृदय में क्यों छुपाये रखा । यद्यपि मैं इन्हें अपने भुजबल से ही शत्रुओं का संहार कर सकता हूँ, तथापि कुल परम्परानुसार मुझे विद्यासाधना करनी उचित है । माता-पिता को प्रणाम कर तीनों भाई आरण्य में गये,भयानक हिंसक पशुओं से व्याप्त वन में प्रवेश कर योग्य

स्थान तीनों भाई ध्यानस्थ खड़े हो गये और दो प्रहर के ध्यान से ही समस्त फलदायिनी अष्टाक्षरी विद्या सिद्ध कर ली और षोडशाक्षर मन्त्र का दस सहस्त्रकोटि जाप प्रारम्भ कर किया। अनेको प्रकार के विध्न आने पर भी अडिग रहे, रावण तो अचल रहा परन्तु कुंभकरण और विभिषण क्षुब्ध हो गये । रावण तो विशेष रुप से दृड़ हो गया, उसकी दृड़ता देख आकाश से देवता साधु-साधु कह कर हर्ष व्यक्त किया। सभी उपद्रवी व्यन्तर भाग गये और रावण को एक हजार विद्याएं सिद्ध हो गई । कुंभकरण को-संवृद्धि,जृंभिणी, सर्वाहरिणी व्योमगामिनी और इन्द्राणी पांच विद्याएं सिद्ध हुई । विभिषण को-सिद्धार्था, शत्रुदमनी,निर्व्याघाता, और आकाशगामिनी यह चार विद्याएं सिद्ध हुईं । अनाहत देव ने रावण से क्षमायाचना की और रावण के लिए स्वयंप्रभ नाम के नगर की रचना की, माता-पिता और बहन हर्षोत्फुल होकर उसी नगर मे रहने लगे । इसके बाद रावण ने छह उपवास का तप किया जो दस दिशाओं के साधने में उपयोगी और चन्द्रहास नाम का श्रेष्ठ खड़ग सिद्ध किया।

रावण का मन्दोदरी के साथ लग्न

उस समय वैताढ्य पर्वत पर सुरसंगीत नामक नगर में मय नाम का राजा राज्य करता था । उसकी हेमवती नामक रानी से मन्दोदरी नाम की कन्या को जन्म दिया, योवनवय होने पर वर के लिए प्रयत्न कर रहे थे परन्तु कोई उचित वर नहीं मिल रहा था। तब उसके मन्त्री ने रत्नश्रवा का पुत्र दशानन योग्य वर महबली भी है और सहस्त्र विद्या साधक है, देव भी डिगाने में

समर्थ नहीं, इससे ही राजकुमारी का लग्न कर दीजिए । मन्त्री का परामर्श उचित जान परिवार से मन्त्रणा कर स्वयंप्रभ नगर आकर मन्दोदरी का लग्न कर दिया।

कुंभपुर के राजा महोदर की पुत्री ताडिन्माला के साथ कुंभकरण और ज्योतिषपुर के राजा वीर की पुत्री पंकज श्री के साथ विभिषण का लग्न हुआ ।

रावण की पत्नी मन्दोदरी ने पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम इन्द्रजीत रखा और दुसरा पुत्र मेघवाहन हुआ ।

रावण की दिग्विजय

लंका पर वैश्रमण का राज्य था । अपने पूर्वजो का राज हथिया कर पिता को हटा दिया था जो तीनों भाईयों को खटक रहा था। विभिषण और कुंभकरण ने जाकर वहां उपद्रव मचाना शुरु कर दिया। जिससे वैश्रमण ने अपने दूत भेजकर सुमाली को कहलाया कि तुम्हारे पुत्र विभीषण और कुंभकरण लंका में आकर उपद्रव मचाते है, इन्हें हटा लो नहीं तो इन्हें मृत्यु को ओर पहुँचा दिया जाएगा। दूत की इस प्रकार की अपमान-कारक बात सुनकर क्रोधित होकर कहने लगा- वह वैश्रमण अपने बल का घमंड करता है, स्वयं दूसरों के अधीन है कर दे कर राज कर रहा है । लज्जा आनी चाहिए, कह दो अब तेरा राज्य लंका पर नहीं रह सकता ।

दूत को विदा कर तीनो भाई सेना लेकर लंका पर चढ़ आए। वैश्रमण भी सेना लेकर रावण से जूझने लगा । थोड़ी देर में ही वैश्रमण की सेना का साहस टूट गया और भागने लगी । वैश्रमण ने अपमानित होने से राज्यमोह त्याग कर मोक्ष-मार्ग की ओर

प्रयाण करना ही उचित समझा और प्रव्रज्या ग्रहण कर ली और रावण ने भी शस्त्र रख दिये । तत्काल वैश्रमण मुनि के समीप जाकर वन्दना कर कहने लगे-हे महानुभान आप ज्येष्ठबन्धु है, इसलिए लघुबन्धु का अपराध क्षमा करें । लंकापुरी पर अपना अधिकार कर विजयोत्सव मनाने लगे।

बाली और सुग्रीव

वानराधिपति सूर्यरजा की इन्द्रमाली रानी से बाली नाम का महाबलवान पुत्र पैदा हुआ। वह अत्यन्त पराकर्मी और उच्च शक्ति का स्वामी था । दुसरा पुत्र सुग्रीव और पुत्री श्रीप्रभा हुई ।

ऋक्षरजा की हरिकान्ता रानी से नील और नल के विश्व विख्यात पुत्र हुए । सूर्यरजा बाली को राज्य सौंप कर प्रव्रज्या धारण कर संयम पालन कर मोक्ष प्राप्त किया । और बाली ने अपने ही छोटे भाई को युवराज पद पर स्थापित किया ।

शूर्पनखा का हरण और विवाह

मेघप्रभ विद्याधर का पुत्र खर की दृष्टि शूर्पनखा पर पड़ी और आसक्त हो गया, शूर्पनखा भी खर पर मोहित हो गई। दोनों की परम असक्ति के कारण खर उसका हरण कर पताल-लंका में चला गया और चन्द्रोदर को हटाकर स्वयं राजा बन गया । उस समय रावण लंका में नहीं था, जब रावण आया उसे मालूम हुआ तो रोष से भर गया और पताल-लंका जाने लगा ।किन्तु महारानी मन्दोदरी ने रोका और कहने लगी- विचार किजिए,आपकी बहन बलपूर्वक नही वह स्वयं उस पर आसक्त हुई । उसकी अनुमति से खर उसे ले गया । आपकी बहन ने वर चुन लिया है तो रोष की बात ही

क्या। अब आप अपना कर्तव्य निभाये। कुंभकरण और विभिषण ने भी समर्थन किया। तब रावण ने मय और मरीच को भेज कर शूर्पनखा का विवाह करवा दिया और खर-शूर्पनखा को लेकर पताल-लंका मे भोगासक्त हो गया। खर द्वारा निकाले गये चन्द्रोदर अल्पायु से मर गया और उसकी पत्नी अनुराधा जो गर्भवती थी भाग कर वन में चली गई और पुत्र को जन्म दिया,नाम विराध।

बाली के साथ रावण का युद्ध

बाली एक शक्तिशाली राजा किशकिन्धा नगरी पर राज्य करता था। एक दिन किसी सामन्त ने रावण की सभा में उसकी शक्ति का गुणगान कर दिया जिससे रावण क्रोधित हो गया और अपना दूत भेजकर कहाँ कि आप के पूर्वज श्रीकंठ को मेरे पूर्वज महाराज कीर्तिधवल जी ने शत्रुओं से रक्षा के लिए और उनकी आज्ञा में रहकर राज्य करते थे। यह स्वामी सेवक सम्बन्ध चलता रहा। आपके पिता आदित्यरजा को यम ने बन्दी बना कर यातना दी थी और मैंने उन्हें मुक्त करवा कर यम को बन्दी बनाया था और किशकिन्धा का राज्य दिया था । आप भी अपने पिता के समान हमारा अनुशासन स्वीकार करे ।

बाली नरेश को सन्देश रुचिकार नहीं लगा और कहा हम स्वामी स्नेह सम्बन्ध के लिए तत्पर है परन्तु स्वामी-सेवक सम्बन्ध हमें मान्य नहीं।

रावण ने किशकिन्धा पर आक्रमण कर दिया। युद्ध होने लगा जिससे सेनिक,हाथी,घोड़े कटने लगे,बाली का मन आहत हो गया और युद्ध बन्द कर रावण को सन्देश भेजा-आप सम्यग् दृष्टि के

श्रावक है, ऐसी हिंसा से बचना चाहिए। पृथ्वी को रक्त रंजन करने से क्या लाभ है । रावण ने बालि की बात मान ली और दोनों युद्ध मैदान में आमने-सामने हो गये । सेनाएं देखती रह गई। रावण ने जितने अस्त्र चलाए बालि ने सब व्यर्थ कर दिए । तब रावण ने सर्पस्त्र और गरुढ़ास्त्र चलाए वह भी बाली ने व्यर्थ कर दिए । तब रावण ने ने चन्द्रहास खड्ग निकाली,तब बालि ने उसका हाथ पकड़कर उपर उठा दिया और कहा-

"हे रावण! वीतराग धर्म अपनाकर भी तेरा राज्य लोभ नहीं गया।" जीवों पर प्रहार करता है इस पाप से कैसे मुक्त होगा। राज्य किसी का स्थाई नहीं होता, यह आता और जाता रहता है, मैं इस घृणा से प्रव्रज्या धारण करने जा रहा हूँ और राज्य छोटे भाई सुग्रीव को दे रहा हूँ जो तेरा स्वामित्व स्वीकार कर चलेगा । सुग्रीव का राज्यभिषेक कर आप श्री गगनचन्द्र मुनि के पास दीक्षित होकर कठिन तपस्या करने लगे जिससे अनेकों लब्धिया प्राप्त हुई ।

रावण का उपद्रव और बाली महार्षि की मुक्ती

सुग्रीव ने अपनी बहन श्रीप्रभा का लग्न रावण से किया और बालि के बेटे चन्द्ररश्मि को युवराज पर प्रतिष्ठित किया । रावण विमान द्वारा नित्यलोक जा रहा था कि नीचे अष्टापद पर्वत पर बाली ध्यानस्थ था जिससे दशानन का विमान रुक गया और नीचे देखा तो बालि प्रव्रजित होकर भी विरोध रखता है, मेरा विमान रोक लिया, मन में आया कि इसको पर्वत सहित उठा कर सागर में फैंक देता हूँ । जैसे ही दशानन ने प्रयास किया बालि ने अपने

पांव का अंगूठा हिलाकर पर्वत के नीचे दबा दिया। लहूलूहान होकर चिल्लाने रोने लगा, जिससे उसका नाम रावण पड़ा । क्षमा के सागर बालि ने अपना अंगूठा हटा लिया और मुक्त कर दिया, रावण ने अपनी गलती स्वीकार कर क्षमायाचना की, फिर वह अभिष्ट की ओर चल दिया और महामुनि बालि घाति कर्मो को क्षय कर केवलज्ञान प्राप्त कर सिद्ध मोक्ष हो गये ।

नारद

आजकल कलयुग में नारद कहते जो दो पक्षों में झगड़ा करवाएं उसे नारद की संज्ञा दे देते हैं वास्तव में नारद महान तपस्या के बल कुछ ऋद्धियां-सिद्धिया प्राप्त कर आकाश मार्ग से समस्त भू-खण्ड में विचरण कर एक-दूसरे को अवगत करवाते हैं ।

एक बार राजा मरुत और रावण विचार-विमर्श कर रहे थे कि अचानक महार्षि नारद जी पधार गये । रावण ने खड़े होकर उनका स्वागत किया और उच्च आसन पर विराजमान होने को कहा- कुशलक्षेम पूछा और आने का कारण जाना । नारद जी के चले जाने पर मरुत ने रावण से पूछा,- स्वामिन्! " यह परोपकारी महापुरुष कौन था, जिसके कारण मैं पापरुपी अन्धकूप से निकला?" मरुत को नारद की उत्पति बताते हुए रावण कहने लगा–

"ब्रह्मरूचि नाम का एक ब्राह्मण था । वह घरबार छोड़कर तापस बन गया था । तापस बनने के बाद उसकी कुर्मी नाम की पत्नी गर्भवती हुई । कालान्तर में कुछ श्रमण विचरते हुए आ कर उस तापस के यहाँ आ कर ठहर गये । उन में से एक श्रमण ने

तापस से पूछा-" तुम घरबार छोड़कर वन में आ कर तप कर रहे हो, फिर भी तुम्हारी वासना स्त्री-भोग में लगी हुई है, फिर घर छोड़ कर बनवास का क्या लाभ हुआ ? ब्रह्मरूचि, श्रमण की बात सुन कर विचार करने लगा और बात उचित लगी । प्रतिबोध पा कर उसने साधु प्रवज्या स्वीकार कर ली । उसकी पत्नी श्राविका हुई गर्भकाल पूर्ण होने पर पुत्र रत्न को जन्म दिया, जन्म के समय वह बच्चा रोया नहीं (रुदन न करने के काकण) उस बच्चे का नाम नारद रखा । कालान्तर में कुर्मी कहीं बाहर गई, बाद में जृंभक देव ने नारद का हरण कर लिया । पुत्रवियोग में कुर्मी ने सती इन्दूमाला के पास दीक्षा ग्रहण कर ली। जृंभकदेव ने नारद का पालन पोषण किया और शास्त्रों का अध्ययन भी करवाया और नारद को आकाशगामिनी विद्या भी दी । नारद जी श्रावक के व्रतों का पालन करता हुआ विचरने लगा । उसने मस्तक पर शिखा रखी और ऐसा रुप बनाया जिससे न तो वह गृहस्थ दशा मे और न ही साधु-वेश में माना जाए । वह गीत और संगीत में रुचि रखता था और कलह प्रिय हो गया । दो पक्षों मे झगड़ा करवा कर मनोरंजन करने में तत्पर रहता था और वचाल भी बहुत था । दो राज्यों में सन्धि व विग्रह करना उसका खेल मात्र था । हाथ में छत्र,अक्षमाला, कमंडलु रखना और पांवों में पादुक पहिन कर चलता था। इसका पालन देव ने किया इसलिए श्रमण की देवर्षि कहलाता है वह ब्रह्मचारी है किन्तु स्वेच्छाचारी है "

मरुत ने अपनी पुत्री कनकप्रभा का लग्न रावण से किया ।

अर्थ का अनर्थ

नारद जी एक बार घूमता हुआ उपाध्याय पर्वत की पाठशाला में गये, वह अपने शिष्यों को ऋग्वेद की व्याख्या समझा रहे थे कि उसमें शब्द "अजैर्यष्टव्यं' का अर्थ भेड़ से यज्ञ करना सिखाया जा रहा था। तब नारद जी ने कहा-" भाई तुम असत्य अर्थ कर रहे हो।" इसका अर्थ पुराना तीन वर्ष का धान है जिसमें उपजने की शक्ति न रहे । ऐसा धान "अज (बकरा)" कहलाता है। धर्म का काम यज्ञ में अधर्म का क्या काम। अधर्म की बात हो रही हो तो बकरा हो सकता है, धर्म में नहीं ।

रावण का भविष्य

कालान्तर मे रावण, स्वर्णतुंग गिरि पर केवलज्ञानी महार्षि अनंतवीर्य जी को वन्दना करने के उपरान्त धर्मदेशना सुनकर पूछने लगे-" भगवन, मेरी मत्यु का निमित्त क्या होगा । मैं किस के द्वारा मारा जाऊँगा ।"

भगवन ने कहा-"रावण, भविष्य में उत्पन्न होने वाले वासुदेव के द्वारा पर स्त्री के निमित्त से मारा जाएगा ।"

भगवन से भविष्य जान कर प्रतिज्ञा की कि-" जो पर स्त्री हो मुझे नहीं चाहेगी, मैं उसके साथ रमण नहीं करूँगा ।"

पवनंजय के साथ अंजनी का लग्न और उपेक्षा

वैताढ्य पर्वत पर आदित्यपुर नाम के नगर का राजा प्रहलाद की महारानी केतुमती के पुत्ररत्न हुआ जिसका नाम पवनंजय जो बलवान और साहसी था। आकाशगामिनि विद्या से वह भ्रमण करता रहता था । उस समय भरतक्षेत्र में समुन्द्र के किनारे महेन्द्र

नगर में महेन्द्र नरेश राज्य करता था । उसकी पत्नी हृदयसुन्दरी से पुत्री ने जन्म लिया जिसका नाम अंजनासुन्दरी रखा गया । यौवनावस्था में वर की तलाश में कईं आए जिसमें पवनंजय का चयन हुआ। निर्धारित समय में दोनों का लग्न हो गया ।

अंजना के श्वसुर ने सात खण्ड का भवन के साथ सब प्रकार की सुख-सुविधा प्रदान किये परन्तु पवनंजय उससे विमुख ही रहा। अंजना विमुख होकर उदासीन रहने लगी और इस तरह से 22 वर्ष बीत गये ।

वरुण नाम का राजा, रावण की अवज्ञा करता था और कहता था कि रावण बहुत घमण्डी हो गया है। रावण ने उसके साथ युद्ध करने के लिए राजा प्रहलाद को साथ रखने के लिए निमन्त्रण दिया । पवनंजय ने पिता के स्थान पर आप जाने की आज्ञा ली। सब से मिला परन्तु अंजना की ओर दृष्टि भी नहीं डाली । अंजना उनको निर्दोष मानकर अपने ही अशुभ कर्मों पर विचार करने लगी और तड़पने लगी । उधर पवनंजय अपने मित्रों सहित सेना की छावनी में पहुँचो संध्या के समय सरोवर के किनारे एक चक्रवाकी की ओर युवराज का ध्यान गया देखा कि पक्षिणि प्यारे के वियोग में तड़प रही है। विचार किया कि पक्षिणि एक रात के वियोग में तड़प रही है तो अंजना कि क्या दशा होगी ? वह वर्षों से तड़प रही होगी। पवनंजय चिन्तित होगया और मित्रों से परामर्श किया। मित्र ने कहा," अब आप ने सही विचार किया, इसलिए तुम अभी जाओ और उस अशवस्त कर प्रातः लौट आओ।

पवनंजय अपनी आकाशगामी विद्या के बल अंजना के भवन पर आ कर द्वार से देखा कि अंजना पलंग पर पड़ी तड़प रही है.। अचानक अंजना की दृष्टि द्वार पर पड़ी वह चौंकी और बोली-

अरे तू कौन है ? यहाँ क्यों आया ? जा भाग यहाँ से ?

युवराज्ञी आपकी महापीड़ा का शमन करने के लिए युवराज पवनंजय पधारे हैं। मैं उनका मित्र आपको बधाई देने के लिए आया हूँ, पवनंजय मेरे पीछे खड़ा है ।

प्रिये- बस बस बहुत हो चुका, मेरा पाप सीमा लांघ चुका, मुझे क्षमा करो, कल्याणी मुझे क्षमा कर दे कहता हुआ पवनंजय अंजना के निकट आया। अंजना आनन्ददायक संयोग से आवाक् रह गई, पलंग से नीचे उतरी प्रणाम किया। पति-पत्नी का मधुर मिलन देख दासियां पीछे हट अनयत्र चली गई ।

प्रिये-मैं गुप्त रुप से आया हूं और गुप्त रुप से चला जाऊँगा। तुम आनन्द में रहना शीघ्र ही विजयश्री प्राप्त कर लौट आऊँगा।

नाथ आप विजयश्री प्राप्त कर लौटे। मैं ऋतु-स्नाता हूँ,कदाचित् गर्भ ठहर जाए तो अन्य मेरे चरित्र पर शंका करेगें,कलंक लगाएगें तब मै क्या उत्तर दूँगी ? अच्छा होगा आप मातेश्वरी से मिलकर जाए । पिता जी को सन्देह हो जाएगा, लो मैं तुझे अपनी नामंकन मुन्द्रिका देता हूँ आप इसे दिखा देना । वैसे मैं शीघ्र ही लौट आऊँगां ।

मुन्द्रिका स्वीकार करते हुए बोलीविजयी भव, अपनी दासी पर कृपा भाव रखें और अश्रुपूरित नयनों से पति को विदा किया ।

अंजनासुन्दरी निर्वासित

गर्भवती होने पर सौन्दर्य की दमक बढ़ने लगी,अंग-प्रत्यंग विकसित एवं सुशोभित होने लगे । लक्षण प्रगट होने लगे कि सास केतुमति को सन्देह हो गया और भर्त्सना करती कहने लगी।

पापिन तूने यह क्या किया ? कुलटा तूने दोनों घरों को कलंकित कर दिया । मेरा पुत्र तुम से घृणा करता है मैं नहीं जानती थी कि तुम व्यभचारिणी हो? पवनंजय के युद्ध में जाने के बाद तुमने यह पाप किया है । मैं तेरी कोई बात सुनने को तैयार नहीं । दो-चार लाते जमाती हुई और महाराज से आज्ञा प्राप्त करवा, उसके आगे रथ आकर खड़ा हो गया । जब विपति आती है तो कोई सहायक नहीं होता, मायके परिवार ने भी रखने से इन्कार कर दिया।

मन्त्रियों ने बोला- जब बेटियों पर कोई अपत्ति आती है तो पिता ही हितचिंतक होते हैं । पितृगृह के अन्यथा कोई और शुभचिन्तक नहीं हो सकता । इसलिए मेरा निवेदन है कि गुप्तरूप से पुत्री का पालन-पोषण करना चाहिए ।

महाराज । न्याय कहता है कि अरोपी की बात भी सुननी चाहिए । बस मन्त्री बस, मेरा आदेश है कि नगर सीमा से बाहर कर दिया जाय । नरेश उठ कर चल दिये-है नाथ। आपके दूर होते ही सारा संसार मेरा शत्रु हो गया ।

पति के बिना पत्नी का जीवन विडम्बना पूर्ण होता है । मेरे प्राण इस दुःख में भी क्यों नहीं निकलते? जंगल के भयानक वातावरण में एक गुफा पर नजर पड़ी, वहाँ एक ध्यानस्थ मुनिराज दिखाई

दिये,दर्शन करने की लालसा से वहाँ पहुँच प्रणाम किया। मुनिराज ने ध्यान खोला-अंजना ने पूछा-इस गर्भ में कैसा जीव है और क्या भविष्य है ? जो दुर्दशा हो रही है । आप मुझ पर कृपा करे, मै कैसे इस की रक्षा कर सकूँ ।

हनुमान जी का पूर्वभव

महार्षि श्री अमितगति जी ने अंजना का दुःख देख कर कारण बताते हुए कहा-प्रियनन्दी नाम का व्यपारी था,जया नाम की पत्नी और दमयंत नाम का पुत्र था,रुपसम्पन्न संयमप्रिय था। एक बार वह क्रीड़ा के लिए उद्यान में गया वहाँ मुनिराज ध्यान में मग्न थे। दमयंत ने वन्दना कर बैठ गया और मुनिराज ने धर्मोपदेश दिया । दमयंत ने गुण ग्रहण कर कई प्रकार के नियम,व्रत लेकर दानादि देता हुआ दूसरे स्वर्ग में महर्द्धिक देव हुआ । देवभव पूर्ण कर मृगांकपुर के राजा वीरचन्द्र की पत्नी प्रियंगुलक्ष्मी के पुत्र हुआ जिसका नाम सिंहचन्द्र था । जैनधर्म पाकर यथाकाल मृत्यु पाकर देव हुआ। देवभव पूर्ण कर कनकोदरी का पुत्र सिंहवाहन हुआ श्री विमलनाथ भगवान के समय श्री लक्ष्मीधर मुनि के पास दीक्षा धारण कर निष्ठापूर्वक पालन कर लांतक देवलोक में देव हुआ । वहां से आयु पूर्ण कर तुम्हारे गर्भ में आया है। यह जीव गुणों का भंडार, महापराक्रमी,विध्याधरों का अधिपति चरमशरीरी और स्वच्छ हृदयी होगा ।

अंजनासुन्दरी का पूर्वभव

कनकराजा की दो कनकवती और लक्ष्मी नाम की रानिया थी । कनकवती मिथ्यात्वी एवं जैनधर्म द्वेषणि जबकि लक्ष्मी

जिनधर्मानुरागिनी । कनकवती ने द्वेष से एक मुनि का रजोहरण हरण कर छुपा लिया। रजोहरण के अभाव से मुनि कहीं जा नहीं सकता था जिससे उनका अहार-पानी छुट गया । अंत में कनकवती ने द्वेष हटा कर क्षमायाचना की । मुनिवर के उपदेश से धर्मप्रिय होकर जिनधर्म का पालन करने लगी । यथाकाल पूर्ण कर सौधर्म स्वर्ग मे देवी हुई और वहां से च्यव कर अंजनासुन्दरी हुई । यह अशुभकर्म समाप्त होने वाला है . थोडी ही देर में अंजना का मामा आ कर ले जाएगा और पति का मिलाप भी हो जाएगा । धर्म का पालन कर विपत्ति नहीं आएगी, यह सारा क्लेश, कलंक आदि पूर्वभव का है । नमो अरिहंताणं करते मुनिराज आकाश में उड़ गये और जंगल में विकराल सिंह गर्जना होने लगी जब वह महामन्त्र नमस्कार का जाप करने लगी ।

हनुमान जी का जन्म

मुनिराज जिस गुफा में ध्यानस्थ था उसका अधिपति मणिचूल नाम का गन्धर्व के दहाड़ से पशुओं मे भगदड़ एवं कोलाहल सुनकर मणिचुल ने अष्टापद का रुप बनाकर सिंह का पराभाव किया । उसके पश्चात अपने मूल रुप में आ कर प्रकट हुआ और आश्रय दिया। गर्भकाल पूर्ण होने पर अंजना ने पुत्र को जन्म दिया। तेजस्वी, सुलक्षणों से युक्त उसके चरण में वज्र अंकुश और चक्र के चिन्ह थे । अशुभकर्मों का उदय न होता,महल में होती तो कितनी चहल-पहल होती । हाँ मैं कितनी हतभागिनी हूँ।

मामा-भानजी का मिलन और बनवास का अंत

एक विद्याधर वहाँ से निकल रहा था कि महिला को देखकर पूछने लगा, सारा वृतान्त सुन कर कहने लगा मैं हनुपुर का राजा प्रतिसूर्य हूँ। मनोवेगा मेरी बहन है और तू मेरी भानजी हुई । मेरा सदभाग्य है कि मैं ऐसे वन में तुझे जीवित देख रहा हूँ तेरी विपत्ति का अंत हुआ, अब तूँ मेरे साथ चल । मामा को देख अंजना रोने लगी, मामा ने सन्तावना देते हुए अपने विमान में बिठाया ।

बालक अंजना की गोदी में लेटा हुआ था कि बालक की दृष्टि एक चमकते झुमर पर पड़ी, पकड़ने के प्रयास में उछला और विमान से नीचे पर्वत पर गिर गया। अंजना घबरा कर चिल्लाने लगी। राजा विमान को स्तंभित कर नीचे उतरा और बालक को हँसता-खेलता पाया। जिस पर्वत पर गिरा था उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये । बालक को ला कर अंजना की गोदी में दिया और कहने लगा-पगली तू रो रही है जिस पर्वत पर गिरा पर्वत चूर-चूर हो गया, यह किलकारियां मार रहा है । यह महाबली पराक्रमी है । अंजना का हनुपुर में सत्कार हुआ और जन्मोत्सव मनाया नाम दिया हनुमान। अंजना उपर से तो हंसती रहती थी परन्तु कलंक से वह चिन्तित रहती थी । हनुमान सुखपूर्वक बढ़ने लगा ।

पवनंजय का विजयी होकर लौटना

वरुण रावण का अधिपत्य स्वीकार नहीं कर रहा था और खरदूषण को बन्दी बनाया हुआ था । पवन को समझाने पर खरदूषण को छोड़ दिया और रावण से सन्धि हो गई। रावण ने प्रसन्न हो कर पवन को वापिस भेजा । पवन का विजयी होकर लौटने पर भव्य स्वागत हुआ । परन्तु अंजना नजर नहीं आई माता-पिता को प्रणाम कर तुरन्त अंजना के महल में गया जो विरान पड़ा था, दासियो से अंजना पर कलंक सुन कर पवनंजय दहल उठा, बिना कुछ खाये-पिये ही ससुराल पहुँचा जब वहाँ भी नहीं मिली तो शोकाकुल हो गया । तब महाराज प्रहलाद और राजा नरेश अंजना की खोज में निकले । चारों तरफ सैनिक घूम रहे थे और उधर पवनंजय का माता अपनी मूर्खता पर पश्चाताप कर रही है भावी अनिष्ट की संभावना दिख रही है । अंजना का पिता भी पश्चाताप कर रहा है कि मैंने आवेश में आकर मन्त्री की परामर्श ठुकरा दी। उधर पवनंजय ने मित्र से कहा-तुम जाओ, मैं अब जीवित नहीं रहना चाहता । सेनिक खोज करते हनुपुर पहुँचे जब अंजना मिल गई तो कहने लगे पवनंजय विरक्ती से चिता में कूदने वाला है। समाचार सुनते ही प्रतिसूर्य अंजना को विमान में लेकर वन की ओर गया, पवनंजय कूदने से पहले अंजना की निर्दोषता कह रहा था कि विमान वहां पहुँच गया । सुखद मिलन हुआ और सब हनुपुर पहुँच गये।उधर अंजना के माता-पिता को सुखद समाचार मिलने पर वह भी हनुपुर पहुँच गये और पवनंजय का परिवार भी हनुपुर आ गया । हर्ष की कोई सीमा न रही । हनुपुर में अचानक उत्सव का वातावरण बन गया जो कई दिनों तक चलता रहा । उत्सव पूर्ण होने पर सब अपने-अपने स्थान चले गये, किन्तु अत्याग्रह के कारण पवनंजय,पत्नी और पुत्र सहित वहीं रहे।

बाल नरेश दशरथ जी

सिंहरथ का पुत्र ब्रहमरथ हुआ। इसके बाद अनेकों राजे इस वंश में हुए, जो जैन धर्म के अनुयायी होते हुए मोक्ष पधार गये कुछ देवलोक गमन कर गये। इन सब के बाद अयोध्या में अनरण्य नाम का राजा और पृथ्वीदेवी रानी से दो पुत्र हुए-अनंतरथ और दशरथ । अनरण्य का एक मित्र था सहस्त्रकिरण जो रावण से युद्ध करते हुए जन विवाश देख कर जैन भगवती दिक्षा ग्रहण करने लगा तो अनरण्य और उसका बड़ा बेटा अनंतरथ भी दीक्षा ले गये और अयोध्या का नरेश बाल दशरथ को घोषित कर गये । आयु के साथ उसका पराक्रम भी बढ़ने लगा। याचकों को मुक्तहाथ दान देता और जिनधर्म में आस्थावान और न्यायशील जन-जन का प्रिय बन गये। दर्भस्थल का सुकौशल नरेश की पुत्री कौशल्या और उसके बाद कमलसंकल का नरेश सुबन्धुतिलक की बेटी सुमित्रा और राजकुमारी सुप्रभा से लग्न हो गया । वेष बदल कर जनक नरेश के साथ भ्रमण करते अपने को गुप्त रखते भटकने लगे । वह कौतुकमंडल नगर पहुँचे कि वहाँ के नरेश ने अपनी पुत्री कैकयी का स्वयंम्बर रचाया हुआ था अनेकों राजे-महाराजे ठाठ-बाठ से उपस्थित उन में यह दोनों जाकर बैठ गये,कैकयी दासी के साथ वरमाला हाथ में लिए मंडप में फिर रही है कि दशरथ को देख उसने माला उसके गले में पहना दी, अन्य राजे जो वहाँ उपस्थित थे चिल्ला उठे हम इस कंगाल और असहाय का वरण कर कैकयी ने गलती की है,हम सेना के साथ आए हुए है हम छीन लेगें।

एकमात्र शुभमति नरेश ने कहा यह अधिकार कैकयी का है, दशरथ को कहा मैं अपनी फौज से आपकी सहायता करूँगा,दशरथ ने कहा-मुझे केवल एक रथ और सारथी चाहिए,तब कैकयी ने कहा-मैं रथ में आपकी सारथी बनूँगीं, इस कार्य के लिए मैं कुशल हूँ। दशरथ सुसस्जित होकर रथ पर सवार हो गया और कैकयी सारथी बनी, अन्य राजा भी मैदान में आ गये, भीषण युद्ध हुआ, दशरथ के बाण और कैकयी का कुशलता से रथ को घुमाना, जिससे दशरथ की रक्षा भी होती रही और शत्रुओं का विनाश होता गया, कुछ मारे गये, कईं घायल हुए और बाकी मेदान छोड़ भाग गये । दशरथ विजयी हुआ, सेना और शस्त्र हाथ लगे। दशरथ ने कैकयी को कहा-तुम्हारे कुशलपूर्वक सारथ्य से मैं विजयी हुआ हूँ जो इच्छा हो मांगो,मैं तुम्हें दूँगा ।

कैकयी-स्वामी मैंने अपना कृतव्य पूर्ण किया है, फिर भी आप प्रसन्न है तो अपने पास रख लो, जब आवश्यकता होगी, मैं मांग लूँगी ।

शत्रुओं की सेना, शस्त्र और महारानी कैकयी को लेकर अपने गृह नगर अयोध्या लौटे। जनक नरेश मिथिला चले गये और अपनी तीनों रानियों को बुलाकर परिचय करवा सुखभोग करने लगे ।

रावण का भविष्य

कालांतर में रावण स्वर्णतुंग गिरि पर केवलज्ञानी महार्षि अनंतवीर्य जी को वन्दन करने के पश्चात धर्मदेशना ग्रहण करने के पश्चात रावण ने पूछा- भगवन् मृत्यु अनिवार्य ,हैकृपा करे कि मेरी मृत्यु का कारण कैसा होगा।

भगवान् ने कहा तेरी मृत्यु भविष्य में होने वाले वासुदेव के हाथों, स्त्री के निमित्त होगी।

रावण ने प्रतीज्ञा की बिना अनुमति के किसी परस्त्री से मैं सम्बन्ध नहीं करूँगा ।.

रावण अपनी नगरी में व्यवस्था देख रहा था कि एक भविष्यवेता (ज्योतिषी) आ गया । रावण ने उसको आसन दिया और कहा- कृपया आप बताए कि मेरी मृत्यु के लिए कैसा और कहां का वासुदेव होगा । कुंभकरण और विभिषण भी वहाँ उपस्थित थे । भविष्यवेता- राजा दशरथ का बेटा होगा और मिथिला नरेश की पुत्री का निमित्त आपकी मृत्यु संभावित है। अभी उन्होंने जन्म लेना है ।

विभिषण का खून खोल गया और कहने लगा मैं इन दोनों को मृत्युलोक पहुँचा देता हूँ तो मारने वाले पैदा ही नहीं होंगें। उस समय महार्षि नारद जी भी वहीं थे ।

दशरथ और जनक का प्रच्छन्न वास

आकाशगामी महार्षि नारद जी वहाँ से चलकर सिधे अयोध्या पधारे। महाराजा दशरथ ने कुशलक्षेम पूछा और आने का कारण। नारद जी ने सारा वृतान्त सुना दिया और कहा विभिषण सेना लेकर आने वाला है । दशरथ ने मन्त्रियों से मन्त्रणा की और नारद जी कहकर सीधा जनक को अवगत करवाने के लिए निकल गये । मन्त्रियों ने लेपयुक्त पुतला बनवाकर पंलग पर लिटा दिया उपर चादर से ढ़क दिया पास में वैद्य दवाईया रगड़ रहे हैं,

रानियां विलाप कर रही है। दशरथ और जनक दोनों भेद बदल कर जंगलों में गुप्त स्थान पर चले गये ।

विभिषण सेना ले कर अयोध्या पहुँचा, महल में हा हा कार मची हुई है, पता चला दशरथ मरणासन पर पड़ा है, फिर भी उसने म्यान से तलवार निकाली और दे मारी जिसे सिर दूर जाकर गिरा और चारों ओर लहू फैल गया,विभिषण अब रावण को कोई मारने वाला पैदा ही नहीं होगा। मिथिला जाने की कोई आवश्यकता ही नहीं रही । जाकर रावण को शुभ सूचना दी, तुम्हें मारने वाले पैदा ही नहीं होगें । रावण निश्चिन्त हो गया ।

मन्त्रियों ने विधिपूर्वक शोक की घोषणा कर कुछ दिन बाद विधिपूर्वक सब काम होने लगे । दशरथ और जनक अपने अपने देश की व्यवस्था में लग गये ।

राम,लक्ष्मण का जन्म

महारानी कौशल्या को अर्द्ध रात्री चार स्वप्न आये,हाथी, सिंह, सूर्य और चन्द्र । एक महार्द्धिक देव च्यव कर रानी के गर्भ में आया है। भविष्यवेता ने इसका फल बताया कोई महा पराक्रमी जीव महारानी के गर्भ में आया है। गर्भकाल पूर्ण होने पर बालक का जन्म हुआ। चारों ओर प्रसन्नता की लहर से जन्मोत्सव मनाया गया और नाम दिया पद्म जो राम के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

रानी सुमित्रा ने एक रात सात स्वप्न देखे-हाथी,सिंह, सूर्य,चन्द्र,अग्नि,लक्ष्मी और समुद्र जिसे गर्भ में एक महार्द्धिक देव आ कर उत्पन्न हुआ जिसका नाम नारायण किंतु प्रसिद्ध हुए

लक्ष्मण के नाम से । सभी विद्याओ और कला में प्रवीण पराक्रमी और अजेय योद्धा हुए ।

भरत और शत्रुघ्न का जन्म

कुछ काल के बाद रानी कैकयी ने पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम भरत रखा और सुप्रभा के पुत्र हुआ नाम दिया शत्रुघ्न। दोनों महाबली पराक्रमी समस्त कलाओ में प्रवीण हुए ।

सीता जी का जन्म और भाई भामण्डल से मिलन

जैन संस्कृति कर्म एवं पूर्व जन्म के कारणों से घटना घटित होती है उनका उलेख हमारे अरिहन्त भगवन जो अपनी भव्य दृष्टि से तीन लोक को देख सकते हैं और जीव के पूर्व जन्मों को भी देखकर बतला देते हैं । ऐसा ही महाराजा जनक और मिथिला महारानी के आंगन में युगल बच्चे (लड़का और लड़की) का जन्म हुआ । महल में जन्मोत्सव मनाया जा रहा है . दोनों बच्चों को दासियां देख-रेख में लगी हुई हैं । महल के चारों तरफ कठिन पहरा लगा हुआ है। घटना इस प्रकार हुई कि एक व्यक्ति जिसका नाम कुलमण्डित था अपनी प्रिया के साथ पल्ली में रहता था और आयोध्या नरेश राजा दशरथ की सीमा में लूट-पाट करता था । राजा के सामन्त बालचन्द्र ने उसे अपने जाल में फंसा लिया,बन्दी बना जेल में डाल दिया । राजा दशरथ ने उसे उच्च कुल का जान कर, योग्य शिक्षा दे कर छोड़ दिया। मुक्त होने पर वह अपने पिता का राज्य प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगा । बीच में ही मुनि श्री मुनिचन्द्र के दर्शन करने का अवसर मिला । श्रावक बन गया और अपूरित राजेच्छा से मर कर मिथिला में महारानी

विदेहा की कुक्षी में पुत्रपने उत्पन्न हुआ और ब्रह्मदेवलोक से च्यव कर विदेहारानी की कुक्षी में कुलमण्डित नाम के जीव के साथ गर्भकाल पूरा होने पर पुत्र और पुत्री का जन्म हुआ ।जिस समय जन्म हुआ उसी समय पिंगलमुनि मृत्यु पाकर प्रथम देवलोक में देव हुए और अपने शत्रु को देखने लगे, पूर्वभव का संचित वैर उत्पन्न हुआ और देखा कि मिथिला नरेश के घर पुत्र हुआ है क्रोध उदय में आया और तत्काल उसका अपहरण कर मार डालने का विचार आया फिर धर्म चेतना जागी, घोर पाप, इससे बचना चाहिए, विचार किया इसको पहाड़ पर छोड़ देता हूँ जंगली जानवर इसको मार देगें । इतने में चन्द्रगति नरेश ने देखा और तुरन्त विमान से पहाड़ पर पहुंचा और देखा दिव्य अलोक वाला बालक और उसके औलाद भी नहीं थी, मनोकामना पूरी हुई बालक को उठाया विमान में बैठा कर राजमहल में आकर रानी को दिया और प्रसिद्ध कर दिया कि रानी के बेटा हुआ है, जन्मोत्सव मनाया गया। उधर मिथिला में हाहाकार मच गई, दासियां परेशान, रानी विदेहा व्याकुल, राजा जनक ने देखा चारों तरफ कड़ा पहरा है कोई आ नहीं सकता यह केवल देव माया है । विवश पुत्री से ही सन्तोष किया और सीता नाम दिया । जब सीता यौवन अवस्था में पहुँची तो योग्य वर की तलाश होने लगी । जिससे श्री राम चन्द्र जी के साथ लग्न हुआ । नारद जी को ज्ञात हुआ तो वह सीधा सीता जी के कक्ष में पधार गए सीता जी डर गई और दासियों को कहने लगी इसको भगाओ और पिटाई करो, नारद जी ने अपना अपमान समझा और झगड़ा करवा कर तमाशा देखने में तो उन्हें

आनन्द आता ही है । नारद जी सीधा चन्द्रगति नरेश के पहुँचा और भामण्डल से मिला भामण्डल ने देवऋषि का स्वागत कर कुशलक्षेम पूछा और योग्य आसन दिया । नारद जी ने सीता के सौन्दर्य का गुण-गान किया, जिससे भामण्डल के मन में सीता जी बस गई । चन्द्रगति नरेश ने महाराजा जनक से याचना की कि सीता के लिए भामण्डल युवराज है, जनक ने प्रार्थना ठुकरा दी कि मैं वचन दे चुका हूँ राजा दशरथ के बेटे रामचन्द्र के साथ इसका रिश्ता हो चुका है । भामण्डल आहत को देखकर चन्द्रगति नरेश अन्य विद्यधरों और भामण्डल को साथ लेकर रमणीय स्थानों में दिल बहलाने के लिए आयोध्या के उपवन में मुनिश्री सत्यभूति जी प्रवचन कर रहे हैं वहां रथ उतारा और वन्दना कर महाराज श्री जी के प्रवचन श्रवण किये, मुनि श्री जी चार ज्ञान के धारक थे और भामण्डल कि स्थिति को देखकर मुनि श्री जी ने, सीता जी ओर भामण्डल के पूर्वभवों का वृतान्त सुनाया और कहा इस भव में वह दोनों भाई-बहन है । भामण्डल का जन्म होते ही देव द्वारा अपहरण किया गया था . भामण्डल सुन कर मूर्च्छित हो गया और कुछ देर बाद जब सावचेत होने पर अपने को धिक्कारने लगा और कहने लगा अच्छा हुआ मैं अज्ञान से महापाप से बच गया । सीता को भाई मिल गया और महाराजा जनक और महारानी विदेहा को खोया हुआ योद्धा पुत्र मिल गया ।

<u>जनक की सहायतार्थ राम-लक्ष्मण का जाना</u>

महाराजा जनक मिथिला नगरी पर राज्य करता था, कि वहाँ कुछ म्लेच्छ उपद्रव करने लगे । जनक उनका दमन करने में असफल

हो रहा था, उसने अपने मित्र राजा दशरथ से सहायता की याचना की, जिससे राजा दशरथ स्वयं सेना लेकर जाने को त्यार हो गया, तब श्री रामचन्द्र को पता चला कि वह सेना लेकर मिथिला जा रहे है, तब वह पिता श्री से निवेदन करने लगे कि जब पुत्र समर्थ हो जाए तो आप क्यों जा रहे हैं ? हमें आज्ञा प्रदान करें कि मयूरशाल नगर में आतरंग नामक म्लेच्छ क्रूर प्रकृति का राक्षस जिसके हजारों पुत्र शुक्रमंकज, कंबोज आदि देशों पर अधिपत्य जमाकर राज्य कर रहे हैं, हम उन्हें खदेड़ कर राजा जनक के राज्य में शांती स्थापित करें ।

बड़ी कठिनाई से राजा दशरथ ने स्वीकृति प्रदान कि, श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण और सेना लेकर मिथिला गये।

म्लेच्छों ने नई सेना और नये सेनापति देख आक्रमण तेज कर दिये, जनक की सेना विफल होती देख प्रजा में अशान्ति फैल गई। तत्काल श्रीराम ने अपना धनुष संभाला और पणच पर टंकार कर बाण वर्षा कर दी जिससे म्लेच्छों का छेदन कर डाला । म्लेच्छ चकित रह गये और फिर तीव्र गति से आक्रमण करने लगे कि राघव के आगे न टिक सके और हताहत होकर मैदान छोड़ भाग गये ।

महाराजा जनक कि प्रसन्नता की सीमा न रही और जनता भी हर्ष मनाने लगी । पराजय एकदम विजय में परिवर्तित हो गई । जनक ने महारानी से कहा- पराक्रमी श्रीराम हमारी सीता के लिए योग्य वर है, महारानी ने भी स्वीकृति दे दी ।

विजयोत्सव मनाया जाने लगा । राम-लक्ष्मण का अभूतपूर्व भव्य स्वागत किया,महाराजा जनक ने अपनी विजय और राज्य कि स्थिरता से अपनी पुत्री के योग्य वर की घोषणा से बढ़-चढ़ कर उत्सव मनाया और शगन के साथ ढ़ेरों उपहार देकर श्रीराम-लक्ष्मण को विदा किया ।

नारद जी को जब मालूम हुआ उन्हों ने अन्तःपुर जाकर भामण्डल को सीता के सौन्दर्य का परिचय सीता के प्रति राग पैदा कर दिया। राजा चन्द्रगति ने दूत भेजकर अपने पुत्र भामण्डल के लिए सीता का वर मांगां । जनक ने कहा- मै क्षत्रिय वचन दे चुका हूँ मैं आपकी मांग स्वीकार नहीं कर सकता ।

जनक का अपहरण

महाराजा चन्द्रगति शक्तिशाली था, उसने राजा जनक का अपहरण करवा लिया और कहा- यदि आप नहीं मानोगे तो मैं ऐसे ही सीता को उठा लाऊँगा और अपने पुत्र भामण्डल का लग्न करवा दूँगा । परन्तु हमारे मधुर सम्बन्ध रहे हैं, मैं उन्हें विचलित नहीं होने देना चाहता, आप सकुशल है इसका समाधान ढूँढ़ने में ।

बताईये क्या समाधान हो सकता है ? राजा जनक ने पूछा।

" मेरे पास दुःसह तेजयुक्त वज्रावर्त और वरुणावर्त नाम के दो धनुष हैं । ये यक्ष सेवित हैं । मैं इन धनुषों की देव समान पूजा करता हूं। ये इतने भारी तेजयुक्त है कि बलदेववासदेव के अन्य इन्हें कोई उठा नहीं सकता, यदि इसको कोई अन्य नहीं उठा सकता । आप ले जाईये और स्वयम्बर की घोषणा कर दीजिए । जो महाबाहू इनमे से एक का प्रत्यंचा चढ़ा देगा वह सीता के वर

योग्य होगा । यदि श्रीराम चढ़ा ले गें तो हम अपनी पराजय मान लेगें अन्यथा सीता भामण्डल की हो जाएगी। "

जनक जी को विवश होकर बात स्वीकार करनी पड़ी । चन्द्रगति पुत्र भामण्डल को लेकर मिथिला के बाहर डेरा डाल दिया । जनक ने महारानी से सारी घटनाक्रम सुनाई,महारानी रोने लगी कि हम अपनी इच्छा से भी पुत्री का विवाह नहीं कर सकते । कैसी विडम्बना है। पुत्र जन्म लेते ही छिन गया कोई अनिष्ट न हो हे देव मैं क्या करूँ?

सीता स्वयंबर

अगले प्रातः होते ही महाराजा जनक ने अपने दूत चारों ओर नरेशों को स्वयम्बर के लिए अवगत करवाया और आने का निमन्त्रण दिया। प्रभावशाली मंडप बनवाया गया समस्त अतिथि राजे-महाराजों के बैठने की व्यवस्था कि गई। एक तरफ स्टेज पर दो धनुष शोभायमान हो रहे थे और दूसरी ओर राजकुमारी सीता सुसस्जित अपनी सखियों के साथ वरमाला लिए खड़ी है । समस्त राजे अपना-अपना स्थान लेकर राजकुमारी सीता को निहार रहें हैं। सब कह रहें है आकाश से देवी उपस्थित हुई है ।

तब मन्त्री ने सब अतिथियों का स्वागत करते घोषणा की इस स्वयम्बर की एक शर्त है जो इन धनुषों का प्रत्यंचा चढ़ायेगा वही राजकुमारी सीता के वर का प्रत्याषी होगा । धनुष को चारों ओर सर्प लिपटे हुए थे । सब की निगाह उन धनुषों पर गई । आप जैसा सामर्थ्य समझे आगे आयें।

कुछ राजे आगे गये धनुष देख कर वापिस लौट आए, जिन्होंने उठाने का प्रयास किया वह विफल रहे अन्य ने जाने की आवश्यकता ही नहीं समझी और कुछ कहने लगे जनक को अपनी शर्त वापिस लेनी पड़ेगी। चन्द्रगति सब की असफलता पर प्रसन्न हो रहा था । चन्द्रगति ने घोषणा की,कि धरती पर कोई योद्धा नहीं रहा, यह सीधा प्रहार राम-लक्ष्मण पर था । लक्ष्मण जी व्यंग को सहन नहीं कर सके और बोले, " महानुभाव ! आप को हमें बच्चे समझकर ऐसा व्यंग नहीं करना चाहिए था । हम अभी आप की शंका का निवारण कर सकते हैं।" लक्ष्मण ने श्रीराम से अनुरोध किया हम अपमान नहीं सहन कर सकते । कृपया उठे-

ज्योंहि श्रीराम उठे अन्य नरेश वंयंग करने लगे, जब मंच पर पहुँचे तो सर्प धनुष से हट कर चले गये और श्रीराम ने ऐसे उठाया कि बाँस का धनुष है, ज्योंहि प्रत्यंचा चढ़ाया विजय की टनकार चारों ओर गूँज उठी और सीता जी ने वर माला श्रीराम को पहना दी। श्रीराम की आज्ञा पाकर लक्ष्मण जी भी उठे और दूसरा धनुष भी उठा कर ऐसी टंकार की कि लोगों के कान हिल गये । भामण्डल और चन्द्रगति निराश हो कर आयोध्या पहुंचे जैसा उपर भामण्डल सीता मिलन में दर्शाया गया है । चहूँ ओर जय श्रीराम गूँजने लगा । जनक नरेश का सन्देश पाकर महाराजा दशरथ मिथिला पहुँचे, राम-सीता का विवाहोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया और जनक के भाई कनक की पुत्री सुभद्रा का लग्न श्री लक्ष्मण जी से हुआ । दशरथ जी पुत्र और पुत्रवधुओं को साथ लेकर अयोध्या लौटे जहाँ भव्य स्वागत हुआ ।

दशरथ नरेश की विरक्ति

दशरथ नरेश को चक्षु रस के कुम्भ भेंट में मिले और वे सब अपनी रानियों को सेवादारों एवं दासियों द्वारा भेज दिया। कुंचकी जो वृद्ध था के हाथ कौशल्या को एवं अन्य दासियो के हाथ भेज दिया। दासिया कुछ यौवन थी शीघ्र ही महारानियों के पास पहुँच गई, जिससे महारानी कौशल्या के पास अभी नहीं पहुँचा था,उसने समझा कि यह मेरा अपमान है सौतो के सामने,ऐसे जीवन से तो मरना ही अच्छा है, वह उदास थी कि महाराज दशरथ पधार गये और कौशल्या कि दशा देखकर स्तब्ध रह गये और जानने का प्रयास किया तब महारानी ने अपनी व्यथा सुनाई तब महाराज दशरथ ने कहा सबसे पहले मैंने आप को ही भेजा था पता नहीं क्यों नहीं अभी तक पहुँचा मैं अभी खबर लेता हूँ कि कंचकी पहुँच गया, दशरथ ने विलम्ब का कारण पूछा-तो वह कहने लगा- कि महाराज मेरा कसूर नहीं यह मेरा बुढ़ापा ही कारण है। यह वृद्ध गलित-गात्र, शिथिल अंग, धूँधली आँखे,पोपला मुँह, हाँफते-रूकते आ रहा हूँ। मैं विवश हूं महाराज़ मुझे क्षमा कीजिए। तब दशरथ ने कहा यह बुढ़ापा मेरे पर भी आने वाला है, मैं क्यों न इस झंझट से मुक्त होकर शेष जीवन मुक्ति के मार्ग पर लगाऊँ । राज्य का उत्तराधिकारी श्री राम को सौंप कर मैं भगवती दीक्षा ग्रहण करूँ ।

कैकेयी का वर माँगना

जब दशरथ ने अपने विचार से सब रानियों क अवगत करवाया तब भरत ने कहाँ मैं भी आपके साथ परिव्रज्या धारण करूंगा। तब कैकेयी ने विचार किया कि पतिदेव के साथ पुत्र भरत बी जा रहा है तो मैं क्या करूँ गी, उसको अपने दो वर जो महाराज के पास सुरक्षित थे मांगने की चेष्टा प्रगट की ।

दशरथ हाँ, हां मुझे याद है कि अच्छा हुआ तुम अभी माँग लिया अन्यथा मुझ पर ऋण रह जाता ।

कैकेयी- " प्रभो ! यदि आपका गृहत्याग कर साधु बनने का निश्चित है, तो राज्य भरत को उत्तराधिकारी बनाएं और मैं राज्यमाता बनने का मनोरथ पूरा कर सकूं।'

कैकेयी की बात सुनते ही दशरथ जी को अघात लगा और चिन्ता के सागर में डूब गये । चिन्ताग्रस्त दशरथ को देख कैकेयी अपने शयनकक्ष में चली गई और राम-लक्ष्मण दोनों आ गये। पिताश्री की अवस्था देख राम कहने लगे- देव आप चिन्ताग्रस्त क्यों दिखाई दे रहे हो ऐसा क्या कारण है ?

" मैं क्या कहूँ राम विरक्ती के समय कठिन समस्या आ गई है, युद्ध विजय के पश्चात् मैं दो वर कैकेयी को माँगने के लिए कहा था, जो उस ने मेरे पास सुरक्षित रख दिये थे, अब वह माँग रही है जो मेरी चिन्ता का कारण है। "

" इस में चिन्ता करने की क्या आवश्यक्ता है, माता की माँग पूर्ण कर आप ऋण मुक्त हों वह क्या माँग है जिससे आप चिन्ताग्रस्त हो गये ?" कृपया शीघ्र बतायें ।

" वत्स ! मैं क्या अपने मुँह से कहूँ ? भरत के लिए राज्य और तुम्हे 14 वर्ष का बनवास ।"राम तो यह कोई चिन्ता वाली बात नहीं मैं अभी जाने को तैयार हूँ और भरत को राजगद्दी सौंप कर आप ऋणमुक्त हो जाएं । यह मेरे लिए परम प्रसन्नता की बात है आप माता की इच्छानुसार ऋणमुक्त हो ।

राम की वन जाने की तैयारी

राज्य नकारी चीज़ पर, इतने हैं हैरान।
वर देने को है पिता, मांगों हाजिर प्राण।।

जब राम चन्द्र वन में जाने लगे तो माता कौशल्या को प्रणाम करने गये तब वे सुनते ही विलाप करने लगी, मैं क्या सुन रही हूँ मुझे मौत क्यों नही आती और अचेत हो गयी। जब माता सुमित्रा को प्रणाम करने गये तो लक्ष्मण मैं भी आपके साथ ही रहूँ गा । सीता ने कहा मैं अपना पतिव्रत धर्म का पालन करूँगी और आपके साथ ही वन में वास करूं गी। लक्षमण ने भी माता कौशल्या को प्रणाम कर भ्रातृभव से राम के साथ हो गये और नागरिक भी साथ जंगल की ओर चल पड़े ।

भरत द्वारा कैकयी की भर्त्सना

राजकुमार प्रस्ताव सुन, बोले भरत कुमार।
उदक विलोने से कभी, निकला है कभी सार।।

जब श्रीराम,लक्ष्मण और सीता जी बनवास चले गये तो भरत जी का राज्यभिषेक की तैयारी होने लगी किन्तु भरत जी ने स्वीकार नहीं किया, भ्रातृभाव से दुःखी माता कैकेयी पर अक्रोश करने लगे।

माता कैकेयी को कहने लगे, " माँ! यह कुवुद्धि क्यों सुझी ? आप ने कैसे विचार कर लिया कि मैं ज्येष्ठ भ्राता की उपेक्षा एवं अवेहलना कर के राजा हो जाऊँगा ? अरे, कम, से कम मुझे तो पूछ लिया होता ? आप की एक भूल ने सब को आशान्त बना दिया।" मेरी माता से ऐसा अनर्थ क्यों हुआ ?

<u>कैकयी का चिन्तन</u>

सुन कर रानी वचन, भूल गई रंग चाव।
विरह पुत्र का ना बने, सोचन लगी उपाय।।

भरत की बातें माता को शूल बन कर दुःख देने लगी। जन जन की निन्दा के समाचारों ने दुष्कृत्य का भान करा दिया, फिर भी वे आशव्स्त रही थोड़े दिनों की बात है सब ठीक हो जाएगा । परन्तु जब भरत का विरोध उग्र होता गया, तब वह हताश हो कर अपने को पापिन समझने लगी और समजने लगी कि मैं मर भी जाऊँगी तो यह कलं धुलने वाला नहीं है, अच्छा है अब मैं अपनी माँग को निरस्त कर दूँ और राम्लक्ष्मण को वापिस लेने जाऊँ ।

<u>राम को लौटाने का प्रयास</u>

आज्ञा मुझ को दीजिए,प्राणपति जग नाथ।
लाऊँ राम बुलाये के, चलूँ भरत के साथ।।

दशरथ- **कैकयी के सुनकर वचन, बोले दशरथ भूप।**
अक्ल ठिकाने आ गई, सोची युक्ति अनूप ।।

काकेयी अपने शयनकक्ष में विचाराधीन थी कि दशरथ आ गये और कहने लगे मैं अपने ऋण से मुक्त हो गया हूँ और भरत का राज्यभिषेक किया जाए परन्तु भरत विरोध कर रहा है, क्या मैं

राम को लौटाने के लिए निमन्त्रण दूं। काकेयी और भ्रत ने कहा- हम भी सामन्तों के साथ श्रीराम को विवश करेगे कि वह वापिस लौट आए। राम आगे बढ़ रहे थे कि भरत, माता काकयी और मन्त्रीगण ने आकर श्रीराम से अनुरोध किया कि आप वापिस अयोध्या में लौट आएं ।

आज्ञा ले निज नाथ की, चली राम के पास।
भरत मंडली और कैकयी, हो रहे अति उदास।।
मेरी गलती पर नहीं, करना चाहिए ध्यान।
सागरवत गम्भीर तुम, मेरे सुत पुण्यवान् ।।

कैकयी ने कहा- " वत्स ! अपने छोटे भाई की याचना पूर्ण करो । तुम सदैव भ्रातृ-वात्सल रहे हो ।तुम्हारे पिता और छोटा भाई निर्दोष है, एक मात्र मैं ही दोषी हूँ, तुच्छ बुद्धि-कुबुद्धि के कारण यह भूल हुई है। मुझे क्षमा कर दो ।"

रामचन्द्र ने कहा-" माता ! मैं महाराज दशरथ का पुत्र होकर, अपनी प्रतीज्ञा को भंग कर दूँ, ऐसा कभी नहीं हो सकता ?"

ऐसे वार्तालाप चलता रहा,परन्तु राम अपने प्रण पर अटल रहे । भरत से अनुरोध करने लगे, "भाई ! तुम क्या पिता जी की और मेरी प्रतीज्ञा भंग करना चाहते हो ? जो प्रतिज्ञा का पालन न कर सके, उस मनुष्य का मूल्य ही क्या रहता है ? तुम्हे हमारे वचन का निर्वाह करने में सहायक होना चाहिए। फिर मेरी भी आज्ञा यह है, उसका पाल करना तुम्हारा कर्त्तव्य है । तुम मेरी आज्ञा की अवेहलना नहीं कर सकते ।"

श्रीराम ने सीता को संकेत किया, वे जल का कलश भर लाई। रामचन्द्र ने भरत जी का पूर्व की ओर मुँह करके बिठाया और अपने हाथों से भरत के मस्तक पर जलधारा दे कर उन्हें अयोध्यापति घोषित किया । (अन्य रामायणों में उनकी चरणपादुका का वर्णन है) और कहने लगे-अब तुम राज्य-धुरा को धारण करो और मुझे निवृत्त कर के संयमधुरा धारण करने दो।" भरत जी कर्त्तव्य बुद्धि से राज्य का संचालन करने लगे और दशरथ, महामुनि सत्यभूतिजी के पास दीक्षित हो कर साधना करने लगे ।

<u>वन में विचरते अन्य दुःखियों के दुःख हरते हुए आगे बढ़े</u>

भरत के राज्यभिषेक के पश्चात, रामचन्द्र,सीता और लक्ष्मण ने कैकयी को प्रणाम किया और दक्षिण की ओर चल दिए। वह सब अश्रुपुर्ण अयोध्या लौट गये । एक वृक्ष के नीचे तीनों बैठकर राम ने लक्ष्मण से कहा- यह प्रदेश अभी-अभी उजाड़ हुआ दिखता है। इतने में एक राहगीर मिला, राम ने उस से पूछा- यह प्रदेश शमशान क्यों नजर आ रहा है । पथिक ने कहा- यह महामालव का अवंति देश है, सिंहोदर नाम का पराक्रमी शासक है। यहां एक वज्रकर्ण नाम का सामन्त देखभाल करता था। एक बार वह शिकार को गया,हिरणी का शिकार किया कि दूर एक महामुनि तपस्या कर रहा था, उनके दर्शन किये और धर्मोपदेश से शिकारी बुद्धि का विकार मिटा कर नियम लिया कि **अरिहन्त देव,** निग्रन्थ गुरुदेव के अन्य के आगे झुकना नहीं,दृड़ प्रतीज्ञा कर ली। जिससे राजा सिंहोदर क्रुद्ध होकर वज्रकर्ण को दण्डित करने के लिए आक्रमण

कर दिया। वज्रकर्ण ने सन्देश भेजा मेरा आप से कोई विरोध नहीं परन्तु मैं अरिहन्त के अन्य किसी के आगे नहीं झुक सकता । यदि आप मेरी प्रतीज्ञा उचित नहीं समझते तो मैं राज्य छोड़ सकता हूँ । उसके साथ अन्य जनता भी छोड़कर चली गई । इन दोनों मे द्वेष के कारण ऐसा हुआ। लक्ष्मण जी से सिंहोदर की भेंट हुई और समझा कर समझोता करवाया ।

<u>कल्याणमाला एवं कल्याणमल्ल</u>

वन में चलते-चलते एक वृक्ष के नीचे बैठ गए और लक्ष्मण जी पानी लेने चले गये, दूर एक सुन्दर सरोवर नजर आया वहाँ कुबेर का राजा कल्याणमल्ल क्रीड़ा करने आया, जब लक्ष्मण जी को देखा तो उन पर मोहित हो गई, हृदय मे काम व्याप्त हो कर विचलित करने लगा । लक्ष्मण जी को अतिथ्य ग्रहण करने का न्यौता दिया। । लक्ष्मण जी मुख-कमल स्त्रीभाव देखकर समझ गये कि यह स्त्री पुरुषवेष में रहती है ? पूछा- कि आप का ऐसे क्या प्रयोजन है ?

उत्तर दिया- यहाँ का राजा वाल्यखिल मेरे पिता थे मेरे जन्म से पहले म्लेच्छों ने आक्रमण कर बांध कर ले गये, बुद्धिमान मन्त्रीयों ने मेरे जन्म से मुझे लड़का घोषित कर दिया और पड़ोस के राजा सिंहोदर ने जब तक मेरे पिता नहीं लौटते मुझे राज्याधिपति की मान्यता दी, जिससे मैं कल्याणमाला से कल्याणमल्ल हूँ ।

रामचन्द्र ने कहा- जबतक हम तुम्हारे पिता को नहीं लाते तुम पुरुषवेष में ही रहो और मन्त्रियों ने कहा- लक्ष्मण जी इसके पति होगें । म्लेच्छों से वालिखिल्य को मुक्त करवाया ।

यक्ष द्वारा रामपुरी की रचना- वर्षाऋतु के आगमन के कारण एक वृक्ष के नीचे ही ठहरना उचित समझा कि एक यक्ष ने याचना की,स्वामिन् । यह नगरी आपके लिए है । मैं गौकर्ण यक्ष हूँ। आप हमारे आतिथी है, आप जब तक यहाँ रहेगें मैं आपकी सेवा में उपस्थित रहूँगा । आनन्दपूर्वक रहते समय व्यातीत किया ।

कपिल का भाग्योदय- एक ब्राह्मण यज्ञ के लिए फल-फूलादि लेने के लिए वन में आया तो देखकर चकित हो गया कि सुन्दर भवन कैसे बन गया और एक सुन्दर नारी देख निकट गया और पूछा यह नगरी अचानक कैसे बस गई । यक्षिणी ने कहा- तू अपनी मिथ्या छोड़ और आर्हत धर्म स्वीकार कर फिर इस नगरी मे प्रवेश करो । यक्षिणी की सलाह मान कर जैन साधु के पास जाकर धर्मलाभ प्राप्त कर श्रावक बन गया और घर जाकर पत्नी को धर्म समझाया और वह भी श्राविका बन गई, दोनों श्रीराम के पास आए, अपनी व्यथा सुनाई तब श्रीराम ने खुलकर दान दिया जिससे उसकी दारिद्रता दूर हो गई।

वनमाला से मिलन और श्री लक्ष्मण जी का उसके साथ वरण।

अतिवीर्य से युद्ध

जितप्रभा का वरण

मुनि कुलभूषण देशभूषण

जटायु से परिचय-चलते-चलते वह दण्डकारण्य नामक प्रचंड अटवी में आए, वहाँ एक गुफा में रहने कि सुविधा से कुछ दिन ठहरे कि सुगुप्त और त्रिगुप्त नाम के दो चारण मुनि आये। वह दो मासके उपवासी थे पारणे के लिए आये। भक्तिभावपूर्ण वन्दना कर प्रासुक

आहार-पानी से प्रतिलाभित किया । देवों ने वहाँ सुगन्धित जल एवं रत्नों की वर्षा की और वहां दो देव आए और राम को अश्वयुक्त रथ दिया । वहाँ एक गन्ध नाम का रोग से पीड़ित गिद्ध पक्षी बैठा था। सुगन्धित जल के प्रभाव से वह पक्षी नीचे उतरा, महामुनि जी के दर्शन करते ही जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया । मूर्छित हो पृथ्वी पर गिर गया कि सीता जी ने पवित्र जल सिंचन किया, सावधान होकर मुनि जी के पास पहुँचा और उन के चरणों में गिरा। मुनिवरों को स्पर्शौषधि लब्धि प्राप्त थी और पक्षी निरोग होकर चोंच लाल,पंख सुनहरी और पाँव पद्मराग मणि जैसे और सारा शरीर अनेक प्रकार की मणियों वाला हो गया, मस्तक पर रत्न के अंकुर के सामान जटा दिखाई देने लगी और जटायु के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

पाँच सौ साधुओं का घानी में पिलाया

श्रीराम ने मुनियों पूछा- यह पक्षी तो माँस भक्षी है आपके चरणों में आकर शांत और सुन्दर कैसे । मुनिजी- पूर्वकाल में कुम्भकारट एक देश था। यह पक्षी दण्डक नाम का वहां का राजा था। उस समय श्रीवस्ती नगर का राजा जितशत्रु और उसकी पत्नी धारिणी रानी के स्कन्दक नाम का पुत्र और पुरन्दरदशा नाम की पुत्री जन्मी थी । दण्डक के पालक का नाम दूत था । कार्यवश दण्डक ने दूत को जितशत्रु नरेश के पास भेजा वह धर्म में मग्न था। पालक धर्म द्वेषी था । स्कन्धक ने पालक को वाद मे निरुत्तर कर दिया । जिससे पालक अपमानित समझ कर स्कन्धक से दुशमनी रखने लगा। स्कंदक 500 साधुओं के साथ मुनि सुव्रत

स्वामी के पास दीक्षित होकर धर्म प्रचार करने लगे और भगवान से प्रार्थना कि पुरन्दरयशा को बोध देने की आज्ञा प्रदान करें-

भगवन- स्कन्दक तुम्हे और सभी साधुओ को मरणान्तिक उपसर्ग होगा ।

भगवन हम आराधक बनेंगे व विराधक।

तुम्हारे सिवाय सभी अराधक होंगे ।

यदि मेरे साथ सभी आराधक होगें तो मैं सफल समझुँगा और विहार कर दिया । पालक का वैर जागृत हो गया । तत्काल षडयन्त्र की रचना कर उद्यान में ठहराया और गुप्तरुप से उद्यान में शस्त्रास्त्र भूमि में गड़वा दिये। स्कन्दक अपने परिवार सहित दर्शन कर धर्म श्रवण किया। पालक ने राजा को एकान्त में कहाँ- स्वन्दक बगलाभक्त गुप्त हथियार लेकर उद्यान में आया है आप पर आक्रमण करने वाला है । राजा स्तंभित रह गया । .यदि आप को मेरे पर विश्वास न हो तो चल कर देख सकते हो । राजा पालक के साथ उद्यान में आया देखकर मुनिवृन्द के प्रति क्रोध उत्पन्न हुआ और पालक से कहा- तू मेरा रक्षक है तेरी सावधानी से हमें सब मालूम हो गया । तू इन्हें नष्ट कर दे ।

पुरन्दरयशा- **दुःख सागर में मग्न हो, बहा रही जल नीर ।**
कहन लगी भूपाल से, रानी ऐसे बैन ।।

दंडक- **महा खेद मैंने किया, कुछ भी नहीं किया विचार।**
ऐसे पापी दुष्ट को, दिये सभी अधिकार ।।

पालक ने आज्ञा प्राप्त होते ही घानी में बालमुनियों को पेलना शुरु कर दिया सब ने सन्थारा लिया हुआ था । मृत्यु प्राप्त होते ही

अग्निकुमार जाति के देव उत्पन्न हुए। रानी स्कन्दाचार्य कि बहन पुरन्दरयशा अपने भवन में बैठी देख रही थी कि देव उठा के श्री सीमन्दर स्वामी के पास ले गया जहां वह परिव्रज्या धारण कर साधना करने लगी । स्कन्दक ने निश्चय किया यदि मेरा तप है तो मैं आवश्य बदला लूँ ।

दंडक- **धिक धिक ऐसे संसार को, और मुझे धिक्कार।**
अब दिल में ही यह बसा,तप संयम लेऊँ धार ।।

शम्बूक

पताल नगरी का राजा खर और उसकी पत्नी शूर्पनखा के दो पुत्र थे शम्बूक और सुनन्दन । शम्बूक की इच्छा थी कि मैं सूर्यहास खण्डा की साधना कर प्राप्त करूँ, परन्तु माता-पिता कोई न कोई विघ्न डाल देते थे । शम्बूक विकराल रूप धारण कर दण्डकारण्य में जा कर बारह वर्ष सात दिन की तपस्या को चला गया । एकान्त स्थान देखकर अपने पांव बांध कर उल्टा हो कर मुँह नीचे कर वृक्ष पर लटक गया। मन में मन्त्र साधना कर ध्यान लगाया। चारों ओर बाँसों का जंगल, शूर्पनखा तीन दिन बाद आया करती थी. इस तरह बारह वर्ष चार दिन बीत गये, सिद्धी प्राप्त होने वाली ही थी कि पुण्य में नही थी । इस साधना के बल से सूर्यहास खड्ग आकाश से नीचे उतरता हुआ वंशगव्हर के निकट अपनी सुगन्ध फैलाने लगा। उस समय रामादि कुछ दूर ठहरे हुए थे । लक्ष्मण जी घूमते हुए उधर आ गये और उनकी दृष्टि सूर्यहास खड्ग पर पड़ी और उत्साह पूर्वक उसे ग्रहण कर लिया और उसकी परीक्षा करते हाथ चला दिया और शम्बूक सिर कट कर लक्ष्मण

जी के पास खून की धारा बह रही है,लक्ष्मण जी चौंक गये, निगह दौड़ाई तो देखा शरीर वृक्ष पर लटक रहा है। पश्चाताप करने लगे निरापराध का मेरे से वध हो गया । रामचन्द्र के पास आए और उसकी साधना और मृत्यु की बात बताई। श्रीराम कहने लगे कि साधक कहीं निकट ही होगा। कर्मों की विचित्र लीला साधक को मौत और लक्ष्मण जी को बिना साधना प्राप्त हो गई।

रुप ऋद्धि बुद्धि अति, सेवा भक्ति महान ।
होनहार आगे सभी, बन जाते नादान ।।
रुप कहे मैं ही मैं हूँ, ऋद्धि कहे मैं कहलाती हूँ ।
बुद्धि कहे मैं ही तुम दोनों का ग्रास कर जाती हूँ।।
होनी लगी मुस्कराने, और बोली जब मैं आऊँगी ।
रूप, झाद्धि, सिद्धि आदि, कुछ हो सब पर छा जाऊँगी ।।

काम-पीड़ित शूर्पनखा

रावण की बहन जब आई तो देखा सिर कटा पड़ा है और रक्त की रेखा जा रही है, विलाप करती हुई उधर चल पड़ी और लक्ष्मण जी पर नडर पड़ी तो काम वासना जाग गई ।

जिधर गया लक्ष्मण, उधर चली चरण चिन्ह देख ।
नयनों से जल बह रहा, कर रही सोच अनेक ।।

नजर पड़ी एक वृक्ष के नीचे दो पुरुष और एक स्त्री नजर आई। प्रथम दृष्टि श्री राम पर पड़ी और सुन्दर रुप देख कर आसक्त रह गई ।

काम बाण जिसको लगे, सुधबुध दे विसराय ।

शोक हुआ काफूर सब, बसे राम दिल मांय ।।

रामचन्द्र को मोहित करने के लिए अपना रुप वैक्रिय क्रिया से अप्सरा के समान अनुपम सुन्दरी बना लिया और राम के निकट आई। उसे देख श्रीराम पूछने लगे-

देख हाल यह श्री राम ने, मन में किया विचार ।
किस कारण उद्यान में, फिरे अकेली नार ।।
शूर्पनखा को देख इस तरह, बोल उठे श्री राम ।
इस दुर्गम उद्यान में, कौन तुम्हारा क्या काम ।।

शूर्पनखा-भद्रे मैं अंवतीपुर नरेश की प्रिय पुत्री हूँ । कोई खेचर मेरा हरण कर यहाँ ले आया . शूर्पनखा की मानसिक स्थिति उसकी आँखों से और चेहरे से स्पष्ट दिखाई देती थी । दोनों भाईयों को सन्देह हुआ, यह मायाविनी नारी है, जाल रचा फंसाने का काम कर रही है । एक दूसरे को सावधान रहने का संकेत करते हुए

" प्रिये ! मैं तो प्रणय-बन्धन में बन्धा हुआ हूँपत्नी मेरे साथ है। तुम्हारा मनोरथ पूरा नहीं कर सकता। लक्ष्मण अकेला है उसको प्रसन्न कर के देख लो । "

शूर्पनखा लक्ष्मण जी के पास गई और प्रणय प्रार्थना की ।

क्यों कामन आँधी हुई, फिरती शर्म उतार ।
पहिले मेरे भ्रातृ को बना चुकी भर्तार ।।
कहां गया वह सत्य तेरा, जो पति दूसरा चाहती हो।
बन की कहीं चूड़ेल आन, नखरे हम को दिखाती है।।
शूर्पनखा सहमी जाती, लक्ष्मण बेधड़क सुनाते हैं ।
सिया राम उधर हंस-हंस कर, दोनों हाथ ताली बजाते हैं ।।

हठात् पुत्र शोक उत्पन्न हुआ क्रोथित होकर नागिन की तरह तड़पी और शीध्र ही पताल-लंका में पहुँचकर पुत्रघात का वर्णन अपने पति खर को बताने लगी । पुत्र वियोग सुनते ही खर विद्यधरों की सेना लेकर राम-लक्ष्मण पर चढ़ाई कर दी और दण्डकारण्य में पहुँच गया ।

<u>सीता का अपहरण</u>

खरदूषण की सेना देख लक्ष्मण जी उठे और कहने लगे खरदूषण को काल पुकार रहा है। बाणों की वर्षा कर दी।

गड़गड़ाहट सुन घनघोर शब्द, सुन सब दल का मन कांप पड़ा ।
यह क्या आफत आती है, खरदूषण का दिल हांप पड़ा ।।
आधि शक्ति तोड़ लखन ने, वाणों की झड़ी लगाई है ।
आँधी आगे जैसे तृणें, ऐसे फौज भगाई है ।।
शूर्पनखा ने हाल देख यह, दांतो में उँगली डाली है ।
फिर बोली हाय सितम लक्ष्मण कर देगा सब दल खाली है ।।

तत्काल उसे युक्ती सूझी और वह उड़कर रावण के पास पहुँची और कहने लगी, " बन्धु! दण्डकारण्य में राम और लक्ष्मण दो भाई आये हुए हैं तेरे भानजे ने विद्या साधने समय लक्षमण ने उसे मार डाला, अब खरदूषण सेना लेकर गया, तो वे उसे भी मार देगें, उनके साथ राम की पत्नी सीता एक देवांगना है, उस के समान इस संसार में कोई अन्य रुपवती स्त्री नहीं हो सकती ।" बहिन की बात सुन भाई रावण मौहान्ध हो गया । तत्काल अपने पुष्पक विमान में बैठकर दाण्डकारण्य की ओर प्रस्थान कर गया। जब

दृष्टि राम पर पड़ी तो चौंक गया इस से उत्कृष्ट सुन्दरी कैसे प्राप्त की जा सकती है।

युद्ध में जाने से पहले राम ने लक्ष्मण से कहा था-कि यदि कोई भीषण विपत्ती आ जाए तो सिंहनाद करना । यदि सिंहनाद करके श्रीराम को हटा दिया जाए तो काम असान हो सकता है और सीता का सहरण किया जा सकता है ।

अवलोकिनी विद्या तुरत करी याद भूपाल।
आन खढ़ी हुई सामने, लगी पूछने हाल ।।
लगी पूछने हाल, आज किस कारण मुझे बुलाई ।
बतलाओ जो काम आपका लायक मैं करने आई ।।

देवी वहाँ से युद्ध की दिशा मे गई और वहां से गुप्तरुप में सिंहनाद किया, जिसको सुनते ही श्रीराम के हृदय में अघात लगा।

राम व्यग्र हो उठा और सीता भी चिंतित हो कहने लगी-

" आर्यपुत्र! लक्ष्मण भाई पर संकट उत्पन्न हो गया है, सहायता के लिए सिंहनाद किया है विलम्ब मत करो ।"

कर्मगति होकर रहे,करोड़ों करे उपाय।
धनुष बाण श्रीराम ने कर के सजाय।।
कुछ सीता से कहन से,कुछ प्रेरा सिंहनाद।
पहिन कवच अब चल दिये अरुणावर्त की साध।।

जब श्रीराम जाने लगे तो अपशकुन हुए किन्तु उनकी उपेक्षा कर युद्धस्थल को जाने लगे । रावण ने अकेली सीता देख, जोगी का रुप धारण कर सीता को पानी पिलाने की याचना करने लगा और बल पूर्वक उठा विमान में बिठा कर ले जाने लगा । सीता पर

अचानक विपत्ति चिल्लाने लगी, सहायता..सहायता. जटायु पक्षी पास ही था बोला- " माता! मैं आ रहा हूं, डरो मत।" जटायु तत्काल उड़ा और रावण को सम्बोधित कर बोला-

"हे दुष्ट निशाचर ! ऐ नीच निर्ल्लज छोड़ दे माता को . नही तो अभी तेरे पाप का फल चखाता हूँ। " वह रावण पर झपटा, अपनी तीक्ष्ण चौंच, नाखून धारधर पंखों से रावण पर प्रहार कर दिया, रावण को जख्मी कर दिया, रावण ने क्रुद्ध होकर अपनी खड्ग से पंख काट दिये, जटायु भूमि पर गिर कर तड़फने लगा । सीता जी विलाप करती रही ।

" हे शत्रु के काल प्रणेश! हे वत्स! हे पिता! हे वीर भामण्डल! यह पापी मेरा अपहरण कर के ले जा रहा है, बचाओ, कोई मुझे इस पापी से बचाओ ।"

मार्ग मे अर्कजटी के पुत्र रत्नजटी खेचर ने सीता का रुदन सुना और सोचा कि-" यह क्रन्दन तो मेरे स्वामी भामण्डल की बहन सीता का लगता है . अभी वह राम के साथ वनवास मे हैं, कदापि किसी लम्पट ने राम-लक्ष्मण को भ्रम में डाल कर अपहरण किया है।" मेरा कर्त्तव्य है मै सीता को मुक्त करवाऊँ । खड़ग ले कर उछला और रावण के सामने आ खड़ा हुआ और कहने लगा-

"अरे धूर्त लम्पट! छोड़ दे सती को। अन्यथा तू जीवित नही बचेगा, मैं तुझे इश पाप का मजा चखाऊँगा ।'

रावण ने रत्नजटी का आक्रमण करते देख उसकी सब विद्याओं का हरण कर लिया । विद्या हरण के साथ वह नीचे गिरा और वहां कुम्बगिरि पर रहने लगा ।

रावण सीता को तरह-तरह के प्रलोभन देने लगा। सीता- दुष्ट तेरा काल तुझे निमन्त्रण दे रहा है ।

श्रीराम सिंहनाद के कारण युद्धस्थल पर पहुँचे तो लक्ष्मण हैरान हो गया तुम भाभी को अकेला छोड़ कर क्यो चले आए । राम ने कहा –तुमने सिंहनाद किया था । लक्ष्मण कि धूर्त ने आपको धोखा दिया, मैंने सिंहनाद नहीं किया । निःसन्देह किसी धूर्त ने देवी को उड़ा ले जाने के लिए किया होगा। आप जाइये, देवी की रक्षा कीजिए मैं अभी शत्रुओं को समाप्त कर आता हूँ। जब श्रीराम आए तो सीता शून्य देखकर हृदय में अघात हुआ ।

उधर भीष्ण युद्ध में लक्ष्मण ने खर को मार डाला । युद्ध समाप्त होते ही विराध को लेकर लक्ष्मण श्रीराम के पास पहुँचे राम को विषाद में डूबे देखकर लक्ष्मण को खेद हुआ । राम अक्रोश की ओर देखते कह रहे थे हे वनदेव मैं सारी अटवी में भटक आया हूँ कहीं भी मुझे सीता का पता नहीं चला । कौन ले गया । लक्षमण की शक्ति का अनुमान न लगा कर मैंने कैसी मूर्खता कर ली । लक्ष्मण को देख अपनी दोनों बाजुओं में आलिंगन किया। विराध ने उसी समय अपने अनुचरों को सीता की खोज में भेज दिया । राम लक्ष्मण और विराध वहाँ से पताल लंका पधारे वहाँ खर का पुत्र सन्ध सेना लेकर युद्ध करने आ गया जब शूर्पनखा ने राम-लक्ष्मण को देखा तो सन्ध को बुला कर राम-लक्ष्मण की शक्ति का एहसास करवा रावण के पास भेज दिया और विराध को पताल-लंका का राज्यभिषेक कर राम-लक्ष्मण खर के महल में रहने लगे।

शूर्पनखा ने यूँ किया, श्वसुर गृह का नाश ।

अब पहुंची लंकापुरी ,करने कुमित प्रकाश ।।

असली नकली सुग्रीव

किश्किन्धा का राजा सुग्रीव की पत्नी तारा अत्यन्त सुन्दरी थी। उसके रुप सौन्दर्य पर सहस्त्रगति विद्याधर मुग्ध था उसने उसको प्राप्त करने के लिए हिमाचल की गुफा में रहकर प्रतारिणी विद्या सिद्ध कर ली। सुग्रीव वन विहार गया हुआ था कि सहस्त्रगति सुग्रीव का रुप बना कर किश्किन्धा में पधार गया, उसी समय असली सुग्रीव भी आ गया परन्तु रक्षक आश्चर्य में पड़ गये कि अभी तो महाराज सुग्रीव पधारे हैं यह कौन ? अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए कहा" महाराज तो अभी पधारे है! आप कौन ? जब तक हम विश्वस्त नहीं हो जाते, आप प्रवेश नहीं कर सकते।" मैं ही वास्तविक सुग्रीव हूँ । कोई धूर्त प्रवेश कर गया, उसको पकड़ों कहीं अनर्थ न हो जाए। युवराज को भी सावधान कर दो। अब महारानी और बाली युवराज को भी मायावी सुग्रीव और वास्तविक सुग्रीव में अन्तर करना मुश्किल हो गया । असली सुग्रीव ने क्रुद्ध होकर आक्रमण कर दिया, घमासान युद्ध हुआ दोनों वीर योद्धा और उनकी सेनाएं लड़ने लगी । वास्तविक सुग्रीव का शांत रहना महा कठिन होना, वे ललकारते हुए सामने आ गया और मल्ल युद्ध आरम्भ हो गया। वास्तविक सुग्रीव ने हनुमान जी से निवेदन किया । परन्तु सच्चाई क्या है? वह दर्शक ही रहे । उसने सोचा कि रावण से सहायता मांगू, विचार आया कि वे भी स्वयं लम्पट है कहीं तारा पर ही न मुग्ध हो जाए । पताल लंका नरेश खर का वध हो चुका है क्यों न मैं लक्ष्मण जी का सहयोग

प्राप्त करूँ? विराध के पास अपने विश्वासनीय दूत भेजे । विराध ने कहा- कि तुम सुग्रीव को ही यहाँ भेज दो, सुग्रीव ने आ कर राम-लक्ष्मण जी को सारी व्यथा सुनाई परन्तु वह स्वयं सीता की तलाश में उलझे हुए हैं परन्तु सुग्रीव की व्यथा सुनकर सहायता के लिए तत्पर हो गये और जाने को तैयार,विराध भी जाने को तैयार परन्तु श्रीराम ने कहा- तुम यहां कि व्यवस्था संभालो । वहाँ जाकर देखा तो असली-नकली में अन्तर करना कठिन । ज्योंहि श्रीराम ने वज्रावर्त धनुष का प्रत्यञ्चा चढ़ाया, टंकार हुई कि सहस्त्रगति की परावर्तनी विद्या निकल गई और वास्तविक रुप सामने आ गया । श्रीराम ने फटकारते हुए कहा- " दुष्ट पापी, परस्त्री पर लम्पट! अब अपने पाप का फल भोग ।" बाण से काम समाप्त कर दिया । सुग्रीव का संकट समाप्त हो गया पूर्व की तरह राज्य संभालते हुए सीता की खोज में लग गये ।

शूर्पनखा का रावण को उभाड़ना

शूर्पनखा लंका भाई के पास पहुँच कर रोने चिल्लाने कहने लगी- तुम कैसा भाई कि तुम्हारी बहन का संदूर लुट गया तुम्हारा भान्जा मारा गया, राज-पाट सब छिन गया अब सन्ध केवल बचा है निराश्रित होकर तेरे पास रहने को आया है।

"बहिन! तू शान्त रह , तेरा सुहाग लूटने वाला, पुत्र घातक और राज्य हड़पने वालों को मैं यमराज के पास पहुंचाकर तेरा राज्य वापिस दिलवाऊँगा । जो मर गये वे वापिस तो आ नहीं सकते। शोक करना छोड़ दे ।"

मन्दोदरी रावण की दूती बनी

मन्दोदरी ने देखा कि महाराज रावण अशवस्त नजर आते हैं, तो उनसे कारण पूछा- रावण-मन्दोदरी जब से सीता को देखा है, मैं उसके बिना नहीं रह सकता, मेरे पर कृपया यही होगी कि तुम उसको मेरे निकट लाओ।

मन्दोदरी सीता के पास पहुँची- देवी । मैं महाराज दशानन की पटरानी मन्दोदरी हूँ, किन्तु तेरे सामने मैं एक सेविका के रुप उपस्थित हुई हूँ मेरी विनती स्वीकार कर मैं तेरी सेविका के रुप रहूंगी । तूं त्रिखण्डाधिपति की हृदयश्वेरी बन जा। समस्त राज्य तेरे आज्ञाधीन होगें । सीता- चल कपट कूटनी, तूँ उस कपटी को महापुरुष कहती हो,वह तो चोर है, डाका डाल कर मेरा अपहरण कर ले आया है, इसका विनाश आने वाला है। सीता ने रोषपूर्ण कहा-मेरे पुरोषतम राम और मेरा देवर लक्ष्मण इसको यमधाम पहुँचा देगें ।

रावण से विभिषण की प्रार्थना

वीर विभिषण चल दिए, पहुँचा लंका जाय।
रावण को कहने लगा, ऐसे मस्तक नाय।।
कीर्ति धवल कुल मणि मुकट अय भाई रणवीर।
नम्र निवेदन आपसे, करने आया वीर ।।

जब विभिषण को पता चला कि रावण किसी सुन्दरी का अपहरण कर लाया है और वह उसके अनुकूल न होने से विलाप कर दुखी हो रही है और रावण उसको कष्ट दे रहा है। वह तत्काल देवरमण उद्यान में पहुँचा और सीता को सांत्वना देता हुआ कहने लगा

"भद्रे! तुम कौन हो ? किसकी पुत्री हो ? किसकी पुत्रवधु हो ? आपका पति कौन है ? कारण क्या है न" ? तुम निःसंकोच अपनी बात बताओ, मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ? सीता को कुछ सन्तोष हुआ और कहने लगी- मैं मिथिला नरेश राजा जनक की पुत्री और अयोध्यापति राजा दशरथ की पुत्रवधु हूँ श्रीराम की पत्नी हूँ, पिताज्ञापालन हम जंगल में वास कर रहे थे कि इस मायावि ने छल-कपट से मेरा अपहरण कर यहां ले आया। मेरे पति छटपटा रहे होगें और मैं भी पतिव्रत धर्म का पालन करते अपना शरीर त्याग दूँगी । विभिषण ने ढ़ांढ़स दिया और कहने लगा-मैं रावण से बात करता हूँ ।

विभिषण रावण को कहने लगा- आप ऐसा कृत्य न करे और इस देवी को मुक्त कर दें । वह पतिव्रत, शीलवान औरत है,उसका श्राप आप को खा जाएगा। अनीति और दुराचार अपने कुल के प्रतिकूल है ।

" अरे ओ भीरू कायर? तू इस प्रकार बोलता है ? मेरी शक्ति का पता नहीं तुझे । क्या तुम उन बनवासी राम-लक्ष्मण से बीता हुआ मानता है। आने दो उन्हें, मैं क्षण भर में उन्हें मृत्युलोक पहुँचा दूँगा।' रावण ने कहा-

क्यों मेरा शत्रु बना, भाई होकर ढ़ीठ।
मैं तेरी सुनता नहीं, दिखा यहां से पीठ।।

भ्रातृवर । ज्ञानियों की वाणी सत्य होती दिखाई दे रही है । जिससे आप हठी हो गये है । यह आप के नियम और शोभा के अनुकूल नहीं। रावण विभिषण की उपेक्षा कर उद्यान देवरमण आया, सीता

को पुष्पक विमान में बिठाकर आकाश में ले गया और अपने भव्य भवन, सुन्दर वाटिकांए,निर्मल जलधारा, नदियां और कुण्ड एवं क्रीड़ास्थल दिखा कर ललचाने का प्रयास करने लगा ।

विभिषण ने घोर अन्याय देखते हुए मन्त्रीमंडल से विचारविमर्श किया। समस्त मन्त्रियों ने कहा- हम तो नाम के ही मन्त्री हैं ।

सीता की खोज

सीता की विरह से राम और लक्ष्मण दोनों चिन्ताग्रस्त रहने लगे। शांती लुप्त हो गई । सुग्रीव अपने भोग-विलास में मग्न रहने लगा और अपना कृत्तव्य भूल गया। तब वह नगर में आए तो सुग्रीव को सूचना मिलते ही वह लक्ष्मण जी के पास आया और क्षमायाचना करने लगा और चारो ओर अपने सेनिक दौड़ाए, सीता जी कि खोज में । उधर सीता जी का अपहरण सुन कर भामण्डल भी चिन्चित था।

रत्नजटी से सीता जी का पता लगना

जब देखा सुग्रीव ने,नीचे नजर पसार ।
रत्नजटी आया नजर, गिर गुफा मंझार ।।

सुग्रीव आकाशमार्ग से कम्बद्वीप पहुँचा । सुग्रीव को अपने निकट आते देख रत्नजटी भयभीत हो गया और विचार करने लगा कि रावण ने मुझे मरवाने के लिए यहां भेजा है। कि सुग्रीव ने रत्नजटी को देखा और उसके पास जाकर कहने लगा, तुम मुझे पहचानता नहीं , तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तब रत्न जटी ने कहा- कि रावण सीता का अपहरण कर ले जा रहा था कि मैं ने उसका विरोध किया और उसने मेरी सारी शक्तियाँ हरण कर ली।

उसी समय से मैं यहाँ भटक रहा हूँ और पीड़ा में हूँ आप इधर कैसे-" मैं सीता जी की खोज में ही आया हूँ । तू अच्छा मिला, चल मेरे साथ।" सुग्रीव रत्नजटा को साथ लेकर श्रीराम के पास आया और सारा वृत्तान्त सुना दिया । सीता जी पुकार रही थी और चिल्ला रही थी । मैंने पुकार सुनी तो समझ लिया कि यह भामण्डल की बहन सीता जी के शब्द है । मैं ने प्रयत्न किये परन्तु रावण ने मेरी सारी शक्ति क्षीण कर दी । श्रीराम रत्नजटी की बात सुनकर प्रसन्न हुए और उस सीने से लगा लिया ।

लक्ष्मण जी का कोटिशिला उठाना

श्रीराम जी ने सुग्रीव से पूछा कि रावण की लंका यहाँ से कितनी दूर है । सुग्रीव् स्वामिन् । लंका दूर या निकट की बातनहीं वह प्रचण्ड राक्षस है उस पर विजय कैसे ? हमें पहले अपनी शक्ति पर विचार करना चाहिए। रावण शक्तिशाली योद्धा है ।

श्रीराम- यदि वह योद्धा होता तो चोरों की भांती अपहरण न करता। जब लक्ष्मण के बाण उसको छेदे गें तब तुम देख लेना । आप का कथन सत्य है परन्तु रावण भी अजेय है । अनन्तवीर्य नामक ज्ञानी महात्मा ने कहा था कि जो कोटिशिला को उठा लेगा वही रावण का वध कर सकता है । यदि लक्ष्मण जी कोटिशिला उठा लेगें तो हमें विश्वास हो जाएगा ।

मूल मंत्र का ले शरण, जब हाथ शिला पर लाया है।
जैसे मुद्गर ऐसे लक्ष्मण ने, सिला को वहां उठाया है।।
फिर लगी पुष्पवृष्टि होने,सुर जय जय शब्द सुनाया है ।
फिर बैठ विमान में खुशी सहित,किश्किन्धा नगरी आए हैं ।।

लक्ष्मण जी ने स्वीकार किया और सभी आकाश-मार्ग से चलकर कोटिशिला के पास पहुँचे और लक्ष्मण जी ने सहजता से उसे उठा लिया और देवतागण साधु–साधु शब्दोचार करते हुए पुष्पवर्षा करने लगे । अब रावण का विनाश निश्चित है सभी मान गये और वापिस किश्किन्धा श्रीराम जी के पास आए ।

हनुमान जी का लंका गमन

वृद्ध मन्त्री कहने लगे, दूत देवो भिजवाय।
सीता को यदि वापिस करें, झगड़ा सब मिट जाय ।।
दूत भी ऐसा चाहिए, करे भूत का काम।
एक बार जाने से कर दे काम तमाम ।।

विचार करते हुए सर्वप्रथम रावण के पास दूत भेजना चाहिए। राक्षसकुल में विभिषण नीतिवान है उससे भी विचार विमर्श होना आवश्यक है। लंका में जाना और वहां से लौट आना कोई असान बात नहीं। सुग्रीव ने श्रीभूति को संकेत कर हनुमान जी को बुलाया।

तेजस्वी हनुमान तत्काल वहाँ उपस्थित हुए श्रीराम जी को प्रणाम कर, सुग्रीव ने श्रीराम जी को हनुमान की शक्ति का परिचय करवाया और हनुमान जी को कहने लगे- सीता जी की खोज और उनको सन्देश पहुँचाना है ।

हनुमान जी का विभिषण को सन्देश

प्रेम आपका हो हमें, लाया यहां पर खींच।
किन्तु अब लंक में, होन लगे अति नीच।।

आप न्यायपरायण महामन्त्री हैं । रावण श्रीराम जी कि पत्नी सीता जी का अपहरण कर ले आया है। मैं श्रीरामजी का सन्देश लेकर आया हूँ कि आप सीता जी को मुक्त करवा दें । मैं जानता हूँ कि रावण बलशाली है परन्तु यह कार्य अत्यन्त अधम है। आप इस पाप का परिमार्जन करवाईये।अन्यथा इसका दुःखद परिणाम होगा।

हनुमान, तुम्हारा कहना सत्य है। मैं पहले ही प्रयास कर चुका हूँ फिर भी मैं पुनः प्रयास कर देखता हूँ ।

हनुमान जी वहाँ से चलकर माता सीता के पास पहुँचे।

सीता को सन्देश

हनुमान जी देवरमण उद्यान पहुंचे और छुप कर सीता जी को देखने लगे, वे अशोकवृक्ष के नीचे अत्यन्त दुःखी, निर्बल अशान्त थी। हनुमान जी समझ गये कि सीता पुज्यनीय, पतिव्रता है। हनुमान जी ने श्रीराम की दी हुई मुद्रिका नीचे गिरा दी, सीता श्रीराम जी की मुद्रिका देख प्रसन्न हुई विचार करने लगी श्रीराम पधारे हैं या उनका कोई दूत आया है । सीता जी कि प्रसन्नता देख त्रिजटा अनुमान लगाने लगी कि सीता का मन बदल गया है और मन्दोदरी को सन्देश दिया कि उसकी प्रसन्नता का कोई अन्य कारण नहीं हो सकता ।

मन्दोदरी फिर सीता जी के पास आई और चिकनी-चुपड़ी बातें करनी लगी। सीता जी क्रोधित होकर बोली, कूटनी तुमने क्या समझ रखा है ? तुम्हारा सब का विनाश निकट आ रहा है ।

हनुमान जी ने सीता को कहा- आप निश्चिन्त रहें, श्रीराम शीघ्र ही आपसे मिलने वाले हैं ।

सीता जी को सन्तोष दे चले वीर हनुमान ।
लगे देखने, घूमकर , देवरमण उद्यान ।।

<u>हनुमान जी का उद्यान में उपद्रव</u>

कभी खाते हैं संतरा, कभी बदाम की डाल झुकाते हैं।
कभी लेवें तोड़ अनार, रक्त फूलों पर हाथ जमाते हैं ।।
फिर पहुँचे वीर अंगूरों के गुच्छे पर हाथ चलाते हैं ।
यह हाल देख उस तरफ, बाग का माली लगा चिल्लाने ।।

माली- **अरे-अरे कहा करत भयो, रहयो अंगूर उझाड़।**
मानव नहीं ढ़ीठ तूँ, आकर देऊँ सुधार ।।

हनुमान अपनी शक्ति दिखाने के लिए लंका के उद्यान में पहुँचे वहाँ के वृक्षों को तोड़ने लगे,वहाँ राक्षस पहरा देते थे उन से भिड गये और पकड़-पकड़ कर पटकने लगे उद्यान का विनाश देखकर वह दौड़े और रावण को अवगत करवाया, रावण ने अपने पुत्र अक्षयकुमार को सेना देकर भेजा, युद्ध हुआ अक्षय कुमार मारा गया।

कवच पहन तन पर लिए,सब हथियार सजा।
इन्द्रजीत उस बाग में, पहुँचा जल्दी जाय ।।

जिससे भाई इन्द्जीत सेना लेकर आया, समस्त सेना का विनाश देख इन्द्रजीत ने नागपाश छोड़ा और हनुमान को पांव से लेकर नाक तक बांध लिया, हनुमान जी वे सब तोड़ सकते थे परन्तु अपना बल दिखाने के लिए वह बन्धी बने रहे और बांध कर रावण के दरबार में ले आया ।

देख देख निज गौरव को, दिशकन्धर जी खुश होते हैं।

फिर पवन पुत्र से लंकापति, इस तरह मुखातिब होते हैं ।।

वहाँ हनुमान जी ने अपनी शक्ति से सारे बन्धन तोड़ डाले और उछल कर रावण के मस्तक पर मुकट पर पदाघात करके गिरा दिया । सभी देखकर स्तभिंत रह गये । हनुमान जी किश्किन्धा लौट आए और श्रीराम जी को सीता जी का कुशलक्षेम दिया ।

<u>राम-लक्ष्मण की रावण पर चढ़ाई,समुद्र और सेतु से लड़ाई</u>

बेलंधर पुर नगर का, सेतु श्री महाराय ।
सीमा पर श्रीराम के, दल को रोका आय़।।
युद्ध भयंकर छिड़ गया , लगा होन घमासान।
गिरें धड़ा धड़ सूरमें रणक्षेत्र में आन ।।
वो दृष्य भयानक देख देख, कायर धरणी गिर जाते थे ।
श्रीराम चन्द्र का तेज देख, सब शत्रु ही भय खाते थे ।।
झट भगी यह फौज हाल देख, सुवेल भूप धबराया है ।
उस वक्त सुशैल ने हल्ला कर,भूपति को आन दबाया है ।
सोचा भूप सुवेल ने, अब ना पार बसाय।
संधि को कर फिर उस समय, दिया निशान दिखाय।।

हनुमान से सीता के समाचार सुन, रावण के अपमान की बात जान कर, राम-लक्ष्मण और सुग्रीव, भामण्डल, नल,नील, महेन्द्र, हनुमान, विराध, सुसेन, जामवन्त, अंगद आदि ने रावण पर चढ़ाई कर दी, साथ में अन्य राजा भी अपनी सेना के साथ चल दिए । आकाश वाद यन्त्रों एवं नगाढ़ों से गूँज उठा । अपने स्वामी के कार्य सिद्धि में पूर्ण विश्वास से अभिभूत हो कर विद्याधर-गण, विमान,रथ,अश्व,हाथी आदि वाहनों पर आरूढ़ होकर आकाशमार्ग से

चलने लगे । वहाँ समुद्र और हेतु नाम के दो बलवान एवं दुर्धर्ष राजा थे । उन्होंने राम सेना के साथ युद्ध छेड़ लिया। यह देख नल-नील उन से भिड़ गये और उन को परास्त कर बांध लिया । श्रीराम ने ने उन्हें क्षमा प्रदान की ।अगले दिन वह सुवेलगिरि पर पहुँचे और सुवेल रजा को परास्त कर अपना आज्ञाकारी बनाया । तीसरे दिन हंस द्वीप पहुँचे प्रजाजन भयभीत हो गई। सीता हरण से लंकावासी भावी अनिष्ट की कल्पना कर रहे थे । विनाश-काल निकट दिखाई देने लगा ।

<u>विभिषण की इन्द्रजीत और रावण से झड़प एवं युद्ध</u>

नाश हमारा करने में, तैंने नही छोड़ी बाकी है।
अब समझ गये हैं शायद पिता भी, सब तेरी चालाकी है।।
तू भ्रातृ नहीं कोई शत्रु है जो पिता को तूने तंग किया ।
जो रंग लंका पर चढ़ा हुआ था,तूने सभी विरंग किया ।।

"इन्द्रजीत! तू साहस कर रहा है। जरा न्याय नीति को देख और परिणाम का विचार कर। जिन्हें तू उपेक्षित समझ रहा है, उन्होंने खर-दूषण जैसे महारथी को ससैन्य नष्ट कर दिया। सहस्त्रगति जैसे योद्धा को मार डाला। तू भूल गया उनके दूत हनुमान का पराक्रम।" मैं फिर विनती करता हूँ कि कुमति को छोड़ो और सुमति को अपनाओ ।

विभिषण कि हितशिक्षा ने रावण को क्रोधाग्नि में घृत का काम किया। खड़ग लेकर विभिषण को मारने के लिए तैयार हुआ। तब विभिषण भी क्रुद्ध हो गया परन्तु उस के पास कोई शस्त्र नहीं था और उसने एक खम्बा उखाड़ लिया और युद्ध होने लगा । दोनों को

लड़ते देख कुम्भकर्ण और इन्द्रजीत बीच बचाव करने के लिए तत्पर हुए । उन्होंने दोनों को वहाँ से हटा दिया और वह अपने-अपने स्थान चले गये ।

रावण ने विभिषण से कहा, "विभिषण! तू अब मेरी नगरी से निकल जा । अब तेरा यहाँ रहना ठीक नहीं होगा । तू वह आग है, जो अपने आशियाना को भी जला देती है ।" रावण के वचन सुनकर विभिषण घर आया और अपने परिवार को साथ लेकर लंका से निकलने लगा । न्यायप्रिय होने के नाते, विभिषण के संबधी भी लंका छोड़ने लगे । विभिषण राम के पक्ष में हो गया । विभिषण को आदर के साथ श्री राम के पास लाया गया।

"देव! मैं अपने अन्यायी ज्येष्ठ भाई को छोड़ कर आपकी सेवा में आया हूँ ।""निति निपुण महात्मन्! आपके उदार एवं शुभ आशय से मैं प्रसन्न हूँ। आप उत्तम शासक बनने के योग्य है । हम लंका का राज्य-सिंहासन पर आप को प्रतिष्ठत करें गें। आप प्रसन्नता पूर्वक हमारे सहायक बने रहें ।'

चलते- चलते श्रीराम सेना सहित हंस द्वीप पहुँचे वहाँ आठ दिन रहकर लंका को प्रयाणकिया । रावण की सेना भी मैदान में आ डटी। राजकुमार इन्द्रजीत और मेघवाहन, रावण की दोनों भूजाएं के समान खड़े रहे । इनके इलावा राजकुमार, सावन्त, शुक और सारण मारिच, मय और सन्द आदि वीर भी आ डटे। सर्वप्रथम नल और नील ने युद्ध में हस्त और प्रहस्त को पराजय किया। युद्ध की भीषण होता गया । हनुमान जी पर प्रहार होने लगे, सब विफल हो गये । सुग्रीव और कुंभकर्ण के युद्ध में कुंभकर्ण मूर्छित

होते ही रावण भड़क उठा। तब इन्द्रजीत ने कहा- पिता जी इन मामूली वानरों का क्या आप शांत रहे मैं इन सब को यमधाम पहुँचा देता हूँ । राम और लक्ष्मण की विद्या से कुम्भकर्ण और इन्द्रजीत बन्दी बन गये ।

तब रावण स्वयं मैदान में उतरा, वानर सेना पीछे हटते देख स्वयं श्रीराम आगे आने लगे परन्तु विभिषण ने रोक दिया और स्वयं सामने आ गया। विभिषण को देख रावण बोला-

विभिषण तू मूर्खता मत कर। राम बड़ा धूर्त है। अपने प्राण बचाने के लिए तुम्हें आगे कर दिया है और आप छिप गया है। तेरे प्रति मुझे प्रेम है। तू हट जा ,मैं आज राम-लक्ष्मण को सेना सहित समाप्त करूँगा ।

भ्रातृवर आप भूल में हैं वह आपके लिए काल हैं । किन्तु मैं ने उनको रोका है। आपको समझाने की मेरी अन्तिम निवेदन है कि आप सीता को मुक्त कर दे और सब शांत हो जाएं । रावण नहीं माना और दोनों में भीषण युद्ध होने लगा । कुंभकर्ण के सामने श्रीराम और इन्द्रजीत के सामने लक्ष्मण जी एक-दूसरे पर भीषण प्रहार करने लगे । इन्द्रजीत ने लक्ष्मण को मारने के लिए तामस अस्त्र का प्रहार किया परन्तु लक्ष्मण सावधान थे । क्रोधित लक्ष्मणजी ने इन्द्रजीत पर नागपाश फैंका जिससे इन्द्रजीत धड़ाम गिर गया । दोनों भाईयों के भीषण युद्ध में लक्षमण जी विभिषण के बचाव में आ गये, रावण ने शक्ति को घुमाकर फैंकी कि बीच में ही भामण्डल, सुग्रीव, हनुमान और विराध ने उस शक्ति को मध्य में ही नष्ट कर दिया परन्तु लक्ष्मण जी के वक्षस्थल पर

लगी जिससे लक्ष्मण जी मूर्छित हो गये । तब स्वयं श्रीराम रावण पर झपटे जिससे रावण का रथ चूर-चूर हो गया । रावण दूसरे रथ पर सवार हुआ और वह भी क्षतिग्रस्त हो गया और उसने पीछे हटना ही उचित समझा।

देख रावण घबराया, काल की शंका लाया,राम ने पहुँच दबाया।
एक बाण से रावण का, सारा रथ तोड़ भगाया।।
रावण ने फिर दूजे रथ पर, अपना आसन लिया जमाय ।
उसको भी श्रीराम ने पूर्जा-पूर्जा दिया बनाय ।।
जान बचाने को फिर रावण, तीजे रथ पर जा बैठा जाय।
एक बाण से श्रीराम ने , दिया उसे बेकार बनाय ।।
जान बचानी दशकन्धर को, मुश्किल बनी सामने आय़ ।
वीर दशानन ने फूर्ती से फिर चौथा रथ लिया सजाय ।।
बज्रावर्तज धनुष बाण से, उस को भी दिया गर्द बनाय ।।
दृष्टि से रावण छिपा , जाना जब श्रीराम।
वापिस फिर रथ को किया, आ पहुँचे निजधाम।।
जब देखा लक्ष्मण भाई को, झट गिरे मूर्छा खा ।
गोदी में ले भ्रात को, किया बहुत विलाप ।।

विलाप करते श्रीराम उनका ध्यान लक्ष्मण पर शक्ति प्रहार करने वाले रावण की ओर गया, फिर वे धनुष बाण उठा के रावण को समाप्त करने के लिए जाने लगे, तब सुग्रीव ने विनयपूर्वक कहा "स्वामिन्! रुकिये, रावण निशाचर है। वह लंका में चला गया है। रात्री के समय उसको पाना कठिन है। सर्वप्रथम हमें लक्ष्मण जी को सावधान करना है।" श्रीराम विलाप करते, सुग्रीव, भामण्डल,

अंगद. हनुमान को संबोध कर कहा-दुर्भाग्य ने मुझे विफल कर दिया । विभीषण ने कहा- महाभाव ! शक्ति से बाधित व्यक्ति रात्री पर्यन्त जीवित रहता है अभी सारी रात्री शेष है,यन्त्र-मन्त्रादि उपचार हो सकते हैं । सभी विचार छोड़ कर पहले लक्ष्मण जी को सावधान करना है।

विभीषण की बात सभी को स्वीकार हुई। सुग्रीव आदि ने विद्याबल से एक प्रसाद बनाया, प्रसाद में राम और लक्ष्मण को रखा। प्रसाद के सात कोटे बनाए. प्रत्येक कोटे के चारों दिशाओं में चार द्वार बनाए । पूर्व द्वार के अनुक्रम से-सुग्रीव, हनुमान, कुन्द. दधिमुख, गवाक्ष और गवय रहे। उत्तरदिशा के द्वार पर अंगद, कुर्म, अंग, महेन्द्र, विहंगम, सुशेषण और चन्द्ररशिम रहे। पश्चिम पर-नील, समरशील, दुर्धर, मन्मथ, जय, विजय और सम्भव रहे और दक्षिण द्वार पर-भामण्डल, विराध, गज, भुवनजीत, नल, मैंद और विभिषण पहरा दे रहे हैं ।

लक्ष्मण जी की मूर्छित का समाचार सीता जी को मिला, वे भी विलाप करने लगी। सीता जी को रुदन करते देख एक विद्याधर महिला ने अवलोकिनी विद्या से देखकर कहने लगी-देवी तुम्हारे देवर और श्रीराम कल तुम्हें आ कर ले जायगें ।

उधर रावण लक्षमण की मुर्छा से कभी प्रसन्न तो कभी उदास हो जाता है कि उसके पुत्रों को बन्दी बनाया हुआ है।

दक्षिणद्वार पर भामण्डल के पास एक विद्याधर आया और कहने लगा-यदि आप राम-लक्ष्मण के हितचिन्तक हैं, तो मुझे उनके पास ले चलो, मै उपचार कर सकता हूँ।

नोट-अन्य रामयाण में हनुमान जी संजीवनी बूटी का वर्णन है । हमारे ऐसा नहीं अरिहन्त भगवन ने बतलाया कि विशल्या के पूर्व-पुन्य से सब असुरी शक्तियां दौड़ गई।

विद्याधर प्रतिचन्द जी, आये दक्षिण द्वार।
भामण्डल के प्रेम से, बोले गिरा उचार ।।
शक्ति दूर हटाने की, औषधि बताने आया हूँ।
कृपया जल्दी बतला दिजीए, उनके दुःख से घबराया हूँ ।।

विद्याधर को भामण्डल लेकर श्रीराम के पास आए। विधिवत् प्रणाम करने के उपरान्त अपना परिचय देते हुए कहा-द्रोणमेघ नामक मेरे मामा है,उनकी पत्नी रोगग्रस्त थी गर्भवती होने के कारण वह रोग मुक्त हो गई। पुत्री को जन्म दिया उसका नाम रखा विशल्या, उसके स्नान के जल से रोगी को सिंचन करने से रोग शांत हो जाता है। कालान्तर में चारण-मुनि श्री सत्यभूति से इसका कारण पूछा, तो वह बतलाते हुए कहाकि विशल्या के पूर्वभव के तप से यह विशेषता प्रकट हुई है इस जल से व्रण का संरोहण,शल्योद्वार और व्याधियाँ नष्ट होती है और यह भी कहा कि इस बालिका का पति लक्ष्मण जी होंगे।

प्रतिचन्द के वचन सुन, हर्षे अति रघुराय।
हनुमान,अंगद, सुभट, शीघ्र लिये बुलाय ।।

श्रीराम ने भामण्डल, हनुमान, अंगद और सुभट को बुलाकर विशल्या का जल -स्नान लाने के लिए आज्ञा दी। तत्काल विमान में बैठकर आकाशमार्ग से अयोध्या पहुँचे भरत जी के पास और भरत जी ने अपने मामा से विशल्या की याचना की। द्रोणमेघ ने

विशल्या को प्रदान किया और विमान में सब युद्धस्थल की ओर प्रस्थान कर गये। विमान में प्रकाश हो रहा था, कि श्रीराम चिन्तित कहीं सूर्य उदय हो रहा है, किन्तु स्नानजल अभी आया नहीं, इतने में विमान आ पहुँचा, विशल्या ने लक्ष्मण जी को स्पर्श किया कि शक्ति निकल कर जाने लगी कि हनुमान जी ने उसे पकड़ लिया। शक्ति बोली-" मैं तो देवरुपी हूँ और प्रज्ञप्ति विद्या की बहिन हूँ, मेरा कोई दोष नहीं है। धरणेन्द्र ने मुझे रावण को दे दिया था। मैं विशल्या का तप-तेज सहन नहीं कर सकती, इसलिए जा रही हूँ ।" हनुमान जी ने उसे छोड़ दिया और वह अन्तर्धान हो गई । स्नानजल से अन्य सैनिक भी स्वस्थ हो गये । श्रीराम ने लक्ष्मण को अलिंघनबद्ध किया और विशल्या से वही लग्न किया। यह सब सुनते ही रावण चिन्ताग्रस्त हो गया। मन्त्रियों से मन्त्रणा कि सब ने कहा- कि एक ही उपाय है सीता के मुक्त करना। रावण ने सन्धि संदेश भेजा- मेरे बन्धु छोड़ दो और सीता की माँग त्याग दो मैं तुझे आधा राज्य और तीन हजार कुमारियाँ को इसके बदले में दे देता हूँ।

श्रीराम न मुझे भोग की इच्छा है न राज्य की, यदि रावण सम्मान के साथ सीता को लौटा दे, तो हम युद्धबन्दी मुक्त कर युद्ध बन्द कर सकते हैं । सीता को प्रलोभन देता रहा, परन्त असफल रहा, मन्दोदरी और विभिषण ने फिर समझाया परन्तु उसके सिर पर काल मंडरा रहा था। विद्या साधने लगा। विद्या तो साध ली परन्तु काम के साथ अंहकार और कईं प्रकार के अपशकुन से युद्ध में महाभयंकर रुप बनाकर लक्षमण के साथ अनेकों अस्त्र प्रयोग

किये, लक्ष्मण जी गरुढ़ पर आरूढ़ होकर चारों ओर फिरते, रावण का कोई भी अस्त्र काम नहीं कर रहा। लक्ष्मण जी के बाण से रावण घबरा गया और अर्द्धचक्री का स्मरण किया,चक्र के उपस्थित होते ही लक्ष्मण जी की तरफ घुमाया, चक्र लक्ष्मण जी की तीन बार परिक्रिया कर लक्ष्मण जी के हाथ आ गया। रावण चिन्ताग्रस्त हो कर अपने दुर्भाग्य पर विचारने लगा। लक्ष्मण जी ने चक्र घुमाया और रावण पर फैंका, जिससे उसकी छाती फट गई और जमीन पर गिर गया । अन्तिम सांस लेने लगा, वह ज्येष्ठ कृष्णा 11 का अन्तिम प्रहर था। रावण मर कर चौथी नरक में गया, देवों ने लक्ष्मण जी पर पुष्पवर्षा की और चहूँ ओर जयजयकार होने लगी। जयघोष हुआ वानर दल नाचकूद कर विजयोत्सव मनाने लगे।

विभिषण शोकग्रस्त तो हुआ परन्तु सावधान होकर राक्षसी सेना को सम्बोधन करने लगा-

" वीर राक्षसगण! शान्त हो कर स्थिति को समझो, यह दोनों भ्राता महापुरुष हैं । श्रीराम को आठवें बलदेव और श्री लक्ष्मण जी को आठवें नारायण (वासदेव) स्वीकार करो ।"

श्रीराम ने कुम्भकर्ण और इन्द्रजीत आदि सभी कैदियों को मुक्त कर दिया । राम-लक्ष्मण ने और रावण के सगे सम्बन्धियों ने मिलकर गोशीर्ष- चन्दन की और उत्तम द्रव्यों से रावण का दहन किया । श्रीराम-वीर बन्धुओ आप अपना राज्य संभालो, हमारी तनिक भी इच्छा नही, घोषणा सुनकर कुंभकर्णादि ने कहा राज्य

एवं सम्पत्ति की दुर्दशा हम देख चुके हैं। हम नरकेश्वर नहीं बनना चाहते, अब निग्रन्थ साधना करें गे ।

केवली भगवन्त को वन्दना कर समस्त योद्धाओं के साथ लंका में प्रवेश किया। विभिषण आगे चल रहा है, मंगल गीत गाये जा रहे हैं। ज्योंहि सीता जी पर निगह गई,हर्ष की सीमा न रही और महासती सीता जी की जयघोष होने लगा । भामण्डल ने अपनी बहिन सीताजी को प्रणाम किया और सीताजी ने आशीर्वाद दिया। इसके पश्चात श्रीराम सीता जी के साथ सभी योद्धाओ को लेकर विभिषण का राज्यतिलक किया ।

विभिषण के अग्रह पर 13 दिन तक लंका में रहे,उस समय नारदमुनि जी ने अयोध्या आ कर सब समाचार दिया और उनके आगमन की तैयारियाँ होने लगी ।

स्वागत करने को गया, जनसमूह हर्षाय।
आ रहे श्रीराम खबर, सुन फूला नहीं समाय ।।
जय जय नाद करते हुए आ पहुँचे विमान।
वर्णन नहीं कुछ कर सके, समझो छटा महान ।।
उतारा पुष्पक विमान को, झट बड़े भरत महाराय।
श्री रामचन्द्र ने भरत को, हृदय लिया लगाय ।।
प्रेमभाव से इधर यह, मिल रहे चारों वीर।
माताओं के भी उधर, बहे प्रेम के नीर ।।

भरत जी का पूर्व जन्म और वैराग्य

धन भी संसार में भटकता हुआ पोतानपुर में मृदुमति नाम का ब्राह्मण हुआष पुत्र की उद्दण्डता देख पिता ने घर से निकाल दिया

वह भटकता हुआ कुसंगति में पड़ गया द्युत क्रीड़ा में इतना कुसल हो गया कि उसे कोी जीत नहीं सकता था । धन अर्जित कर वसंतसेना नाम की वेश्या में भोगासक्त हो गया,उसके पश्चात किसी सद्गुरु के उपदेश से संयमी बन गया और आयुपूर्ण कर ब्रह्मदेवलोक में देव हुआ। वहाँ से च्यव कर भुवनालंकार हाथीऔर फिर प्रियद्रशन का जीव हुआ। फिर देव भव छोड़ कर भरत जी हुए। यह जानकर भरत जी एक हजार राजाओं के साथ प्रव्रज्या ग्रहण की, चरित्र पालन करते हुए मोक्ष पदार गये।

शत्रुघ्न जी को मथुरा का राज्यधीश बनाया गय।े

लक्ष्मण जी की 36000 रानियां और आठ पटनानियाँ- 1-वैशल्या,2-रुपमति,3-वनमाला.4-कल्याणमासा.5-रत्नमाला,6-जितपद्मा,7-अभयमति और 8-मनोरमा।

श्रीराम जी की सीता जी के साथ प्रभावती,रतिनिभा,श्रीदामा भी रानियां हुई। जब सीता जी गर्भवती हुई तब तीनों रानियों ने सीता जी का कुशलक्षेम पूछने के बहाने षडयन्त्र रचा, सीता जी से पूछने लगी रावण कैसा था। सीता जी- मैं ने देखा ही नहीं,केवल पाँव ही देखे। कृपया बताएं उसके पैर कैसे थे चित्र बनाकर दिखाएं। भोलेभाव उस ने चित्र बना दिया। फिर वह चित्र लेकर श्रीराम से कहने लगी- यह देखो, सीता के मन में तो रावण बसा है। उधर श्रीराम एक धोबी के कथन सुन कुल की प्रतिष्ठा के कारण सत्य कुचला गया और सगर्भा को बनवास भेज दिया ।

सेनापति के वचन सुनते ही सीता जी मूर्च्छित हो गई सावधान होते ही कहने लगी-

"भद्र ! मेरे दुष्कर्मों का उदय है, तुम जाओ और स्वामी से मेरा सन्देश निवेदन कर देना ।"

" यदि आप को लोकनिन्दा का भय था, तो मुझे वहीं कहते, मैं अपनी कठोरतम परीक्षा देती, क्या आपने यह कार्य अपने विवेक तथा कुल मर्यादा के योग्य किया है ।"

<u>लव-कुश एवं उनके युद्ध</u>

सीता जी ने वज्रजंघ के निवास स्थान में रहकर दो जुड़वें पुत्ररत्न लव-कुश को जन्म दिया । दोनों महापराक्रमी थे । एक बार सिद्धार्थ नामक सिद्धपुत्र अणुव्रतधारी आकाशमार्ग से भिक्षा के लिए सीता के आवास में आया। सीता ने आहार दान दिया और विहार सम्बन्धी सुख-साता पूछा और सिद्धपुत्र ने सीता का परिचय पूछा । सीता ने आप बीती सुनाई और अपने पुत्रों का भविष्य पूछा । उसने अपने अष्टांग निमित से जान कर सीता से कहा- तुम व्यर्थ की चिन्ता क्यों करती है,तुम्हारे दोनों पुत्र राम-लक्ष्मण के समान होगें। सीता ने अनुरोध किया कि इनको आप शिक्षा दें । सिद्धपुत्र ने ऐसी शिक्षा दी एवं कला सिखाई जिससे वह देवों के लिए भी दुर्जय हो गए । समस्त कला सीख कर वह यौवनास्था को प्राप्त हुए । वज्रजंघ नरेश ने अपनी पुत्री शशिचूला और अन्य बत्तीस कन्याओं के साथ लग्न किया और कुश के लिए पृथ्वीपुर नरेश पृथु की कनकमाला से सम्बन्ध करने का सन्देश भेजा, जो उसने अस्वीकार कर दिया और कहा जिनके वंश का पता नहीं उन्हें पुत्री नहीं दी जा सकती । जिसे वज्रजंघ ने अपमान समझ पृथु पर आक्रमण कर दिया । युद्ध में पृथु नरेश के सहायक राजा

बन्दी बना लिए गए और पृथु नरेश ने अपने मित्र पोतानपुर को सहायतार्थ निमन्त्रण दिया और वज्रजंघ ने अपने पुत्रों को बुलाया परन्तु लव-कुश पहुँच गए । भीषण युद्ध हुआ और वज्रजंघ की सेना के पांव उखड़ गये, यह देखकर लव-कुश क्रोधित होकर हाथी की तरह शत्रु पर झपट पड़े जिसे पृथु की सेना संभल नहीं सकी और भाग गई । पृथु भी पीछे हट गया, यह देख लव-कुश बोले आप तो उत्तम कुल और प्रसिद्ध वंश के हैं, फिर हम अज्ञात कुल वालें से क्यों डर कर कायर के समान भाग रहे हों ।

यह सुनकर पृथु लौटा और कहा मैंने तुम्हारे पराक्रम से तुम्हारे वंशज का परिचय पा लिया है और मैं अपनी पुत्री देने का अपना अहोभाग्य समझता हूँ । कनकमाला एवं अन्य राजकुमारियां का लग्न कर दोनों राजाओं मे सन्धि हो गई। राजा वज्रजंघ अपनी सेना के साथ नरेश पृथु के अतिथ्य स्वीकार कर रहे थे कि नारद जी वहां आ गये । कुशलक्षेम पृछा के पश्चात वज्रजंघ ने कहा महात्मन् आप सारा विश्व में धूमते रहते हो पता करना है कि इन दो बच्चो का वंश कौन सा है ।

नारद जी-इन दो बच्चों का वंशज भगवान ऋषभदेव एवं उनके चक्रवर्ती पुत्र भरत के वंश में कई चक्रवर्ती हुए हैं उन में दशरथ पुत्र रामभद्र के यह लाल हैं । यह जानकर वज्रजंध तो सन्तुष्ट हुआ परन्तु पृथु अत्यन्त प्रभावित हुए मेरा जमाता उच्च कुल का है।

यह सुनकर कुश बोला-ऋषिवर-कोटी निन्दा को सुनकर पिता जी ने माता का त्याग कर दिया, यह अच्छा नहीं हुआ ।

यहां से अयोध्या कितनी दूर है । लव ने पूछा ।
यहां से एक सौ सात योजन दूर है । नारद जी

लव-कुश ने वज्रजंघ से कहा- हम पूज्य पिता जी के दर्शन करना चाहते हैं, आप की आज्ञा चाहिए । वज्रजंघ ने उचित अवसर जानकर आज्ञा प्रदान की । लव-कुश के साथ वज्रजंघ और उनके साथ नरेश पृथु भी कुछ सेना लेकर चल पड़े । रास्ते में कई राज्यों को जीतते और अपने आधीन करते आगे बढ़ते गये और अपने गृहनगर पुण्डरीकपुर पहुँचे सभी ने राजा का सत्कार किया और कहा महाराज कितने भाग्शाली है कि बलिष्ठ दो भानजे मिले। दोनों कुमारों ने माता सीता के चरणों में प्रणाम किया । माता ने आशीर्वाद देते कहा तुम भी अपने पिता और काका के समान बनो ।

हे मातुल आपने हमें आज्ञा तो पहले ही दे रखी है और अब कुछ सैनिकों को साथ जाने की अनुमति दीजिए जिससे हम अपनी माता का अपमान करने वाले और उन्हें बनवास जैसा दंड देने वाले महापुरुष का पराक्रम देखना चाहते हैं । सीता भयभीत हो गई और रूदन करते कहा-पुत्रों ऐसा काम मत करो । तुम्हारे पिता और काका देवों के लिए भी दुर्जय हैं महाबली रावण को भी मार डाला । युद्ध की बात छोड़ दो हां यदि दर्शन करने हैं तो विनयपूर्वक जाओ ।

माता आपका अन्याय एवं निर्दयतापूर्ण त्याग करने वाले पिता, हमारे लिए शत्रु बन चुके हैं । अन्याय के आगे हम नतमस्तक कैसे हो सकते हैं । क्या हम जा कर कहें कि हम

तुम्हारी त्यक्ता पत्नी के पुत्र हैं, जिन्हें कलंकिनी कह कर बनवास दिया था । यह उनके लिए भी लज्जाजनक होगा, युद्ध ही उचित मार्ग है । ऐसा मिलन ही यशकारी होगा । वह भारी सेना लेकर चल दिए । अयोध्या के समीप पहुँचने पर राम लक्ष्मण आशचर्यचकित हो गए । लक्ष्मण बोला- ऐसा कौन दुर्भागी है जिन्हें उनकी मृत्यु यहाँ खींच लाई हैं ।

नारद जी सीता के पुत्ररत्नों का समाचार भामण्डल (सीता का जुड़वां भाई) को दे चुके थे कि वह तुरन्त सीता के पास आए। सीता ने कहा तुम्हारे भानजे मेरा अपमान सहन नहीं कर पाए और सेना लेकर आयोध्या चले गये हैं अनिष्ट रोकने का प्रयास करो।

- भामण्डल-बहिन रामभद्र जी ने तुम्हारा त्याग कर उग्र एवं अन्याय वृत्ति का परिचय दिया,अब पुत्रों का वध कर दुस्साहस नहीं करेंगे । इसका उपाय करना है, वह नहीं जानते कि यह दोनों लाल उनके ही बेटे हैं । भामण्डल तत्काल सीता को अपने विमान में बिठाकर लव-कुश के सैनिक शिवर में पहुँचे । दोनों कुमारों ने माता सीता को प्रणाम किया और सीता ने भामण्डल का परिचय करवाया यह तुम्हारे सगा मामा जी हैं, दोनों ने भामण्डल के चरणों में प्रणाम किया और उसने दोनों को छाती से लगाकर प्यार दिया । तुम वीर माता के पुत्र हो, हमारी यह इच्छा है कि तुम युद्ध मत करो ।
- मातुल-हम जानते हैं कि युद्ध ठीक नहीं पर हम कायर नहीं, हमें भीरु मत बनाओ, पीछे हटना भी कुलंकित है, जो उचित

नहीं ।इधर बातें हो रही थी कि दोनों सेनाओं में युद्ध छिड़ गया, दोनों कुमार युद्ध मैदान में आए और उनके साथ भामण्डल सुग्रीव आदि की सेनाओं से रक्षा के लिए आए।

- जब सुग्रीव की दृष्टि भामण्डल पर पड़ी तो चकित रह गए । उन्होंने पूछा आप शत्रुपक्ष में कैसे चले गये । ये दोनों युवक कौन हैं ।
- महाशय यह दोनों वीरपुत्र रामभद्र जी के हैं और मेरे भानजे ।
- यह सुनकर सुग्रीव आदि सब युद्ध छोड़कर सीता जी के पास आए और प्रणाम किया। कुशल क्षेम पूछने लगे ।
- युद्ध उग्रतर हो गया लव-कुश के आगे राम सेना सहन नहीं कर सकी, पीछे हटती भाग गई । दोनों वीर राम और लक्ष्मण के सामने आ गये । राम लक्षमण से पूछने लगे यह दोनों बालक बड़े आकर्षक लगते हैं, शत्रुता नही स्नेह उत्पन्न हो रहा है । शस्त्र प्रहार का मन नहीं करता ।
- हां आर्य इन्हें देखकर मेरा भी क्रोध शान्त हो गया है परन्तु स्थिति वस शस्त्र चलाना ही पड़ेगा ।
- राम का सामना लव से और लक्ष्मण का सामना कुश से हुआ, कुमारों ने अपने प्रतिद्वन्दि पूज्य को सम्बोधित कर कहा –
- आप जैसे विश्वविजेता, राक्षसपति रावण जैसे दुर्दान्त का संहार करने वाले तथा न्याय शिरोमणि आदर्श नरेन्द्र के साथ युद्ध में मुझे हर्ष हो रहा है । सर्वप्रथम बालकों का प्रणाम स्वीकार करो।

- दोनों कुमार इन से अपना सम्बन्ध जानते थे और बड़ी कुशलता से उनका बचाव करते हुए तीव्र गति से आगे बढ़ते गए परन्त राम-लक्ष्मण नहीं जानते थे ये कौन हैं। इसलिए उनके प्रहार में सावधानी नहीं थी ।
- हर प्रकार की पराजय से राम आश्चर्यान्वित एवं चिन्चित हो रहे थे । लक्ष्मण जी भी प्रहार न सह कर मूर्छित हो कर गिर गये । रथवान घबरा कर अयोध्या को रथ मोड़ने लगा कि लक्ष्मण सचेत हो गये । कहा यह क्या कर रहे हो युद्धक्षेत्र से जीवित ही भगा रहे हो मुझे,तत्काल शत्रु के सामने ले चलो । मैं अभी चक्ररत्न से धराशायी कर दूँगा । कुश को ललकारते हुए चक्र घुमा कर फैंका, दोनों बन्धुओं ने चक्र पर भीषण प्रहार कर दिया, चक्र तो आखण्ड रहा परन्तु निकट आ कर प्रदक्षिणा कर लक्ष्मण जी के हाथ आ गया, लक्ष्मण जी चकित हो पुनः घुमा कर फैंका,फिर वापिस आ गया सोचने लगे यह नये बलदेव-वासुदेव उत्पन्न हो गए, नहीं ऐसा नहीं फिर क्या कारण हमारी दुर्दशा का । इन छोकरों से हमारी दुर्दशा, सिद्धार्थ को साथ लेकर नारद जी पहुँच गए और चिन्ता-मग्न राम-लक्ष्मण को सम्बोधित करने लगे ।
- आश्चर्य है रघुपति हर्ष के स्थान आप चिन्ता कर रहे हैं। अपने ही पुत्रों से परभव प्राप्त करना तो सुखद और गौरवमयी होता है । ये आप के ही पुत्र और आपकी त्यागी हुई सीता इनकी माता है । ये युद्ध के निमित आपसे मिलने आए हैं । सारा वृतान्त सुना दिया ।

युद्ध भूमि का बीभत्स दृष्य एवं हुकांर तथा चित्कार आनन्द मंगल में बदल गया, हर्ष का सागर उमड़ पड़ा और चारों ओर जय-जयकार होने लगी । भामण्डल ने वज्रजंघ का राम से परिचय करवाया । राम ने कहा-हे भद्रे आप मेरे साले (भामण्ढल) के समान हो, मेरे पुत्रों को पालन-पोषण और योग्य शिक्षा देकर महान योद्धा बनाया । सब को साथ लेकर आयोध्या पधारे और ग पुत्रोत्सव मनाया ।

।। जय श्री राम ।

इतिहासकार श्री अनुरूद्ध भट्ट की खोज के अनुसार राम वंशज

भरत के दो पुत्र थे- तार्क्ष और पुष्कर। लक्ष्मण के पुत्र चित्रांगद और चन्द्रकेतु और शत्रुघ्न के पुत्र सुबाहु और शूरसेन थे। मथुरा का नाम पहले शूरसेन था। लव और कुश राम तथा सीता के जुड़वां बेटे थे। जब राम ने वानप्रस्थ लेने का निश्चय कर भरत का राज्याभिषेक करना चाहा तो भरत नहीं माने। अत: दक्षिण कोसल प्रदेश (छत्तीसगढ़) में कुश और उत्तर कोसल में लव का अभिषेक किया गया।राम ने कुश को दक्षिण कौशल, कुशस्थली (कुशावती) और अयोध्या राज्य सौंपा तो लव को पंजाब दिया। लव ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया। आज के तक्षशिला में तब भरत पुत्र तक्ष और पुष्करावती (पेशावर) में पुष्कर सिंहासनारुढ़ थे। हिमाचल में लक्ष्मण पुत्रों अंगद का अंगदपुर और चंद्रकेतु का चंद्रावती में शासन था। मथुरा में शत्रुघ्नके पुत्र सुबाहु का तथा दूसरे पुत्र शत्रुघाती का भेलसा (विदिशा) में

शासन था। राम के काल में भी कोशल राज्य उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल में विभाजित था। कालिदास के रघुवंश अनुसार राम ने अपने पुत्र लव को शरावती का और कुश को कुशावती का राज्य दिया था। शरावती को श्रावस्ती मानें तो निश्चय ही लव का राज्य उत्तर भारत में था और कुश का राज्य दक्षिण कोसल में। कुश की राजधानी कुशावती आज के बिलासपुर जिले में थी। कोसला को राम की माता कौशल्या की जन्मभूमि माना जाता है। रघुवंश के अनुसार कुश को अयोध्या जाने के लिए विंध्याचल को पार करना पड़ता था इससे भी सिद्ध होता है कि उनका राज्य दक्षिण कोसल में ही था।

राजा लव से राघव राजपूतों का जन्म हुआ जिनमें बड़गुजर, जयास और सिकरवारों का वंश चला। इसकी दूसरी शाखा थी सिसोदिया राजपूत वंश की जिनमें बैछला (बैसला) और गैहलोत (गुहिल) वंश के राजा हुए। कुश से कुशवाह राजपूतों का वंश चला।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार लव ने लवपुरी नगर की स्थापना की थी, जो वर्तमान में पाकिस्तान स्थित शहर लाहौर है। यहां के एक किले में लव का एक मंदिर भी बना हुआ है। लवपुरी को बाद में लौहपुरी कहा जाने लगा। दक्षिण-पूर्व एशियाई देश लाओस, थाई नगर लोबपुरी, दोनों ही उनके नाम पर रखे गए स्थान हैं।

कुश के वंशज कौन?

राम के दोनों पुत्रों में कुश का वंश आगे बढ़ा तो कुश से अतिथि और अतिथि से, निषधन से, नभ से, पुण्डरीक से, क्षेमन्धवा से, देवानीक से, अहीनक से, रुरु से, पारियात्र से, दल से, छल से, उक्थ से, वज्रनाभ से, गण से, व्युषिताश्व से, विश्वसह से, हिरण्यनाभ से, पुष्य से, ध्रुवसंधि से, सुदर्शन से, अग्निवर्ण से, पद्मवर्ण से, शीघ्र से, मरु से, प्रयुश्रुत से, उदावसु से, नंदिवर्धन से, सकेतु से, देवरात से, बृहदुक्थ से महावीर्य से, सुधृति से, धृष्टकेतु से, हर्यव से, मरु से, प्रतीन्धक से, कुतिरथ से, देवमीढ़ से, विबुध से, महाधृति से, कीर्तिरात से, महारोमा से, स्वर्णरोमा से और ह्रस्वरोमा से सीरध्वज का जन्म हुआ।

कुश वंश के राजा सीरध्वज को सीता नाम की एक पुत्री हुई। सूर्यवंश इसके आगे भी बढ़ा जिसमें कृति नामक राजा का पुत्र जनक हुआ जिसने योग मार्ग का रास्ता अपनाया था। कुश वंश से ही कुशवाह, मौर्य, सैनी, शाक्य संप्रदाय की स्थापना मानी जाती है। एक शोधानुसार कुश की 50वीं पीढ़ी में शल्य हुए जो महाभारत युद्ध में कौरवों की ओर से लड़े थे। यह इसकी गणना की जाए तो कुश महाभारतकाल के 2500 वर्ष पूर्व से 3000 वर्ष पूर्व हुए थे अर्थात आज से 6,500 से 7,000 वर्ष पूर्व।

इसके अलावा शल्य के बाद बहत्क्षय, ऊरुक्षय, बत्सद्रोह, प्रतिव्योम, दिवाकर, सहदेव, ध्रुवाश्च, भानुरथ, प्रतीताश्व, सुप्रतीप, मरुदेव, सुनक्षत्र, किन्नराश्रव, अन्तरिक्ष, सुषेण, सुमित्र, बृहद्रज, धर्म, कृतज्जय, व्रात, रणज्जय, संजय, शाक्य, शुद्धोधन, सिद्धार्थ, राहुल,

प्रसेनजित, क्षुद्रक, कुलक, सुरथ, सुमित्र हुए। माना जाता है कि जो लोग खुद को शाक्यवंशी कहते हैं वे भी श्रीराम के वंशज हैं।

तो यह सिद्ध हुआ कि वर्तमान में जो सिसोदिया, कुशवाह (कछवाह), मौर्य, शाक्य, बैछला (बैसला) और गैहलोत (गुहिल) आदि जो राजपूत वंश हैं वे सभी भगवान प्रभु श्रीराम के वंशज है। जयपूर राजघराने की महारानी पद्मिनी और उनके परिवार के लोग की राम के पुत्र कुश के वंशज है। महारानी पद्मिनी ने एक अंग्रेजी चैनल को दिए में कहा था कि उनके पति भवानी सिंह कुश के 309वें वंशज थे। इस घराने के इतिहास की बात करें तो 21 अगस्त 1921 को जन्में महाराज मानसिंह ने तीन शादियां की थी। मानसिंह की पहली पत्नी मरुधर कंवर, दूसरी पत्नी का नाम किशोर कंवर था और माननसिंह ने तीसरी शादी गायत्री देवी से की थी। महाराजा मानसिंह और ऊनकी पहली पत्नी से जन्में पुत्र का नाम भवानी सिंह था। भवानी सिंह का विवाह राजकुमारी पद्मिनी से हुआ। लेकिन दोनों का कोई बेटा नहीं है एक बेटी है जिसका नाम दीया है और जिसका विवाह नरेंद्र सिंह के साथ हुआ है। दीया के बड़े बेटे का नाम पद्मनाभ सिंह और छोटे बेटे का नाम लक्ष्यराज सिंह है।

मुसलमान भी राम के वंशज हैं?

हालांकि ऐसे कई राजा और महाराजा हैं जिनके पूर्वज श्रीराम थे। राजस्थान में कुछ मुस्लिम समूह कुशवाह वंश से ताल्लुक रखते हैं। मुगल काल में इन सभी को धर्म परिवर्तन करना पड़ा

लेकिन ये सभी आज भी खुद को प्रभु श्रीराम का वंशज ही मानते हैं।इसी तरह मेवात में दहंगल गोत्र के लोग भगवान राम के वंशज हैं और छिरकलोत गोत्र के मुस्लिम यदुवंशी माने जाते हैं। राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि जगहों पर ऐसे कई मुस्लिम गांव या समूह हैं जो राम के वंश से संबंध रखते हैं। डीएनए शोधानुसार उत्तर प्रदेश के 65 प्रतिशत मुस्लिम ब्राह्मण बाकी राजपूत, कायस्थ, खत्री, वैश्य और दलित वंश से ताल्लुक रखते हैं। लखनऊ के एसजीपीजीआई के वैज्ञानिकों ने फ्लोरिडा और स्पेन के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर किए गए अनुवांशिकी शोध के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला था।

****

विस्तृत जानकारी के लिए गद्य में शुक्ल जैन रामायण और पद्य मे तीर्थंकर चरित्र भाग-2 देखें ।

कृपया आप पढ़ें और पढ़ कर अन्य को प्रेरित करें, जिससे हम अपने इचिहास से अवगत हो सकें ।

अर्हत रामायण

जैसे फलों में महाराजा फल आम महान होता है वैसे ही भारतीय इतिहास में सब से लोकप्रिय घटना रामायण महान है । आम की प्रजातियां-सफैदा, दुसैहरी,हाफिज, बनारसी, लंगड़ा, सन्दूरी आदि की मिठास भिन्न भिन्न होती है वैसे ही लेखकों की रामायण के पात्र वही,मूल ध्येय सीता अपहरण और रावण से मुक्ति वही परन्तु शब्दों की शैली,वाद-विवाद मे अपनी विचारक कलात्मक से पाठक को अनुभूति करवाते है कि यही वास्तविक घटना है । जबकि रामायण काल जैन धर्म के बीसवें तीर्थंकर मुनि सुव्रत स्वामी जो आज से लगभग बारह लाख वर्ष पूर्व की घटना है। उस समय रामायण के सभी पात्र जैन धर्म अनुयायी थे । रावण भी आदिनाथ भगवान ऋषभदेव का अनन्य भक्त था। जिस को बाद में लेखकों ने आदिनाथ भगवान शिव का भक्त माना और वैदिक दृष्टि से रामायण की पटकथा लिखी गई, जो पढ़ने में सुनने में और मंच पर देखने में वास्तविक हो जाती है और हमारे दिल-दिमाग को आकर्षित करती है । बहुत लम्बे समय के बाद महार्षि वाल्मिक ने संस्कृत मे 24000 श्लोकों से रामायण की रचना की जबकि महार्षि वाल्मिक का समय इतिहासकारों की दृष्टि में 9000 से 16000 वर्ष का है। उसके बाद अनेकों भारतीय एवं विदेशी भाषाओं मे लिखी गई, सबसे अधिक तुलसीदास की रामचरित मानस धार्मिक दृष्टि से देखी जाती है, जो लगभग आज से 400 वर्ष विक्रमी संवत् 1630 के आस-पास लिखी गई। अर्हत रामायण जैन आगमों से जो अरिहन्त-भगवन्तो की वाणी है जो तीन लोक के ज्ञाता वर्तमान, भूत और भविष्य को देख कर कर्मों से घटना घटित होती है। सभी लेखकों की रचना सुन्दर एवं रचनात्मक है परन्तु अर्हत रामायण बहुत संक्षिप्त में जैन संस्कृति को अवगत करवाने के भाव से प्रस्तुत कर रहा हूँ । रामायण के महाबली योद्धा वीर हनुमान,अंगद, सुग्रीव एवं अन्य सब महापुरुष थे, वानर वा+नर...विचित्र नर अर्थात वन में रहने वाले नर (ऋद्धियों-सिद्धियों के धारक) और इनकी पत्निया एवं माताएं सौन्दर्य की देवियां थी, जबकि योद्धाओं को तो वानर (बान्दर) दर्शाया जाता है तो नारियों को बन्दरिया नहीं दिखाया जाता, यह सब कल्पना है वास्तविकता नहीं।

स्वतन्त्र जैन

जय श्री राम, जय जय राम, जय श्री राम, जय जय राम, जय श्री राम, जय जय राम, जय श्री राम, जय जय राम, जय श्री राम, जय जय राम, जय श्री राम, जय

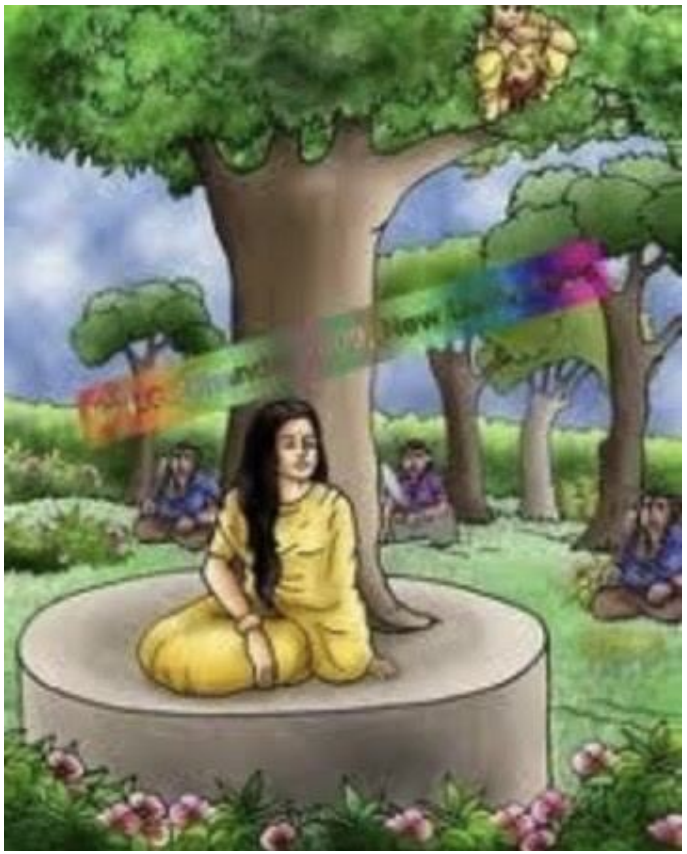

अर्हत रामायण